





पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है । इस तिथि सहित १५वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए । अन्यथा ५ पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा ।







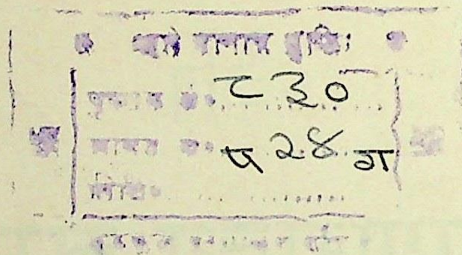
गणराज्य चम्पू





वैद्यरत्न परमानन्द पाण्डेय विद्यावाचस्पति

प्रकाशक :
राजेश कुमार पाण्डेय,
जय कृष्ण कुटी,
१७०१, चाँदनी चौक,
दिल्ली-६.



मूल्य १०) रु०

मुद्रक :
महारथी कार्यालय,
१८-दीवान हॉल, दिल्ली-६
द्वारा अजन्ता आर्ट प्रिंटर्स,
दरियागंज, दिल्ली-६.



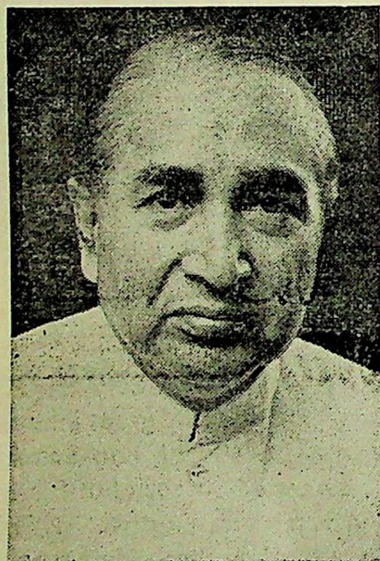
भारत के राष्ट्रपति का सचिव,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली.

SECRETARY TO THE PRESIDENT OF INDIA
RASHTRAPATI BHAWAN,
NEW DELHI.

September 30, 1972

FOREWORD

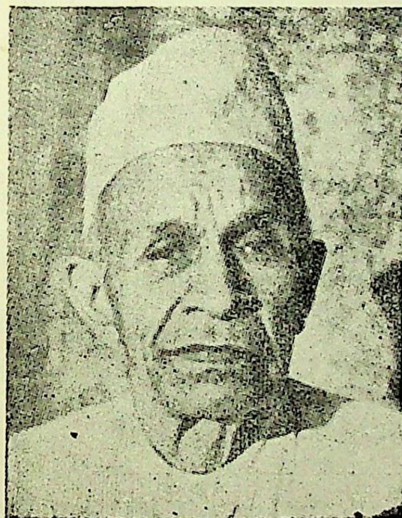
I have gone through the book "GANARAJYA CHUMPOO" by Vidya-Vachaspati Pandit Parmanand Pande with great interest. The original is in Sanskrit but for the benefit of non-Sanskrit knowing readers the author has appended an easy but faithful rendering of the Slokas and prose in Hindi and English. This is, perhaps. the first attempt to write a book in three languages in conformity with the three language formula.



This book, written on the occasion of the Silver Jubilee of Indian Independence, gives a bird's eye view of India's achievements during the last twentyfive years. The author has first traced step by step the history of Delhi—the ancient capital of several empires and the goal of Indian Freedom Struggle as symbolised by Netaji's call of "Delhi Chalo". It is followed by an account of Delhi as the capital of India. Next is the section about principles, achievements and dreams of our national leaders from Mahatma Gandhi to our present Prime Minister, Mrs. Indira Gandhi. The last part very aptly covers the concept of secularism, India's role in the liberation of Bangla Desh, Bank nationalisation, etc.

I have great pleasure in commending this book to the public, which links Delhi's past history with the emergence of Delhi as a symbol of India's unity.

—*Nagendra Singh*



दो शब्द —

वैद्यरत्न परमानन्द जी से मेरा परिचय आरम्भ में उस समय हुआ था जब सन् १९२१ में महात्मा गाँधी ने दिल्ली में आत्मशुद्धि के लिए २१ दिन का उपवास किया था। वैद्य परमानन्द जी उस समय डाक्टर अन्सारी और मसीहुलमुल्क हकीम अजमल खां साहब के साथ गांधी जी के स्वास्थ्य की देख-भाल करने वाले चिकित्सकों के पेनल में थे। उसके बाद तो समय-समय पर अपनी चिकित्सा के सम्बन्ध में मेरा उनसे सम्पर्क बना रहा। जहां तक मेरा ज्ञान है, चिकित्सा के क्षेत्र के साथ-साथ समाज सेवा के क्षेत्र में भी वैद्य जी की प्रतिष्ठा जनसाधारण और शासक वर्ग, दोनों में समान रूप से आज तक अक्षुण्ण बनी हुई है।

इनके द्वारा लिखित 'गणराज्य-चम्पू' को मैंने आद्योपांत देखा और समझा है। इसमें इनके देश-प्रेम की भावना की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। देश के लिए कांग्रेस के नेताओं और शासकों ने जो कुछ किया है, उसे इन्होंने अपनी पुस्तक में सराहा है। वह उचित ही है क्योंकि वे वास्तव में नीर-क्षीर विवेकी हंस की तरह हैं जो जल को छोड़ दूध ही ग्रहण करता है। अस्तु!



स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आज तक की राष्ट्र की उपलब्धियों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन तो वैद्य जी ने किया ही है, देश के अब तक के तीनों राष्ट्रपतियों और तीनों प्रधान मन्त्रियों के सचित्र परिचय एवं उनकी सेवाओं और उपलब्धियों का सजीव और संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करके पुस्तक में चार चाँद लगा दिये हैं।

पुस्तक के प्रारम्भ में भारत की राजधानी दिल्ली के प्राचीनतम रूप से लेकर उसके आधुनिकतम रूप को चित्रित करते हुए उसके



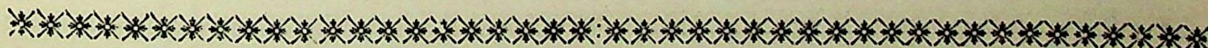




क्रमिक परिवर्तनों की जो झाँकी दी है, उससे भारतीय गण-राज्य की आज की गौरवमयी राजधानी के संघर्षपूर्ण इतिहास की एक भव्य झलक पाठकों को मिल जाती है, जिसके बिना वर्तमान राजधानी दिल्ली का कितना भी गौरवपूर्ण वर्णन क्यों न होता, वह अधूरा सा प्रतीत होता। इस की एक विशेषता यह भी है कि वर्णन में किसी भी सम्प्रदाय के प्रति कहीं भी कोई दुर्भावना व्यक्त नहीं की गई। हमारे देश का सेकुलरिज्म इस रचना में पूर्णतः प्रतिबिम्बित होता है। वास्तव में वैद्य परमानन्द जी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

(ना, म - सहाय)

२१-८-१९७२





शुभ-कामना—

परमानन्द संभूता परमानन्द दायिनी ।
गणराज्याह्वयाचम्पूः गणराज्याय जायताम् ।।

विद्यावाचस्पति श्री परमानन्द शास्त्रि पाण्डेय वैद्यरत्न महोदयेन प्रणीता गणराज्य नाम्नी चम्पूः मया साद्यन्तमालोकिता निदिध्यासिताच । संस्कृत भाषायामीदृग्विधं पुस्तकं विद्वज्जन हृदयाकर्षकं नूनं न्यूनं ममदृष्टिपथ आयातम् । अत्र राष्ट्रपितुर्महात्मनोगान्धेः चतुर्णां महामहिम्नां राष्ट्रपतीनां भारत-भाग्य विधातृणां त्रयाणां भारतस्य प्रधानमंत्रिणां च साङ्गोपांगं वर्णनं वरीवर्ति । स्वतंत्र भारतस्य पुनर्जगगुरु पदवीमारूढस्य रजतजयन्ती महोत्सवोप्यत्र वर्णितोऽस्ति । एतस्य चाभूतपूर्वकार्यस्यकर्तारो वैद्यरत्न महोदया नूनमभिनन्दनीयाः सन्ति ।

—म० म० छज्जूराम शास्त्री विद्यासागरः
अध्यक्ष : संस्कृत प्रचारक मण्डल, दिल्ली
१५ अगस्त, १९७२



प्रारंभिकी—

अनेक शताब्दियों की दासता और उसके विरुद्ध संघर्ष करते हुए भारत ने पच्चीस वर्ष पूर्व न केवल अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता ही प्राप्त की अपितु राजतन्त्र एवं एकतन्त्र के निरंकुश शासन की इकाइयों के अभिशाप से भी छुटकारा पा लिया। आज भारत का गणराज्य विश्व का सबसे बड़ा गणराज्य है। इस स्वतन्त्र भारतीय गणराज्य की २५वीं वर्षगांठ की जयन्ती के पुण्यपर्व पर मैंने इस 'गणराज्य-चम्पू' नामक काव्य के प्रणयन का संकल्प लेकर जहाँ राष्ट्र के प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धा-भावना को व्यक्त किया है वहाँ भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली संस्कृत भाषा के मूल के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा बहुजन प्रयुक्त अंग्रेजी में उसका अनुवाद प्रस्तुत करके शासन द्वारा समर्थित त्रिभाषा फार्मूले को भी व्यावहारिक रूप दिया है। इस रचना को चम्पू नाम इस लिए दिया गया है कि इसमें विभिन्न प्रयुक्त भाषाओं के गद्य-पद्य का मिश्रण है। इसमें पिछले पच्चीस वर्षों में भारतीय गणराज्य के अभ्युदय और

विकास की झाँकी तो है ही, भारत की राजधानी दिल्ली के प्रारम्भ से अब तक के उत्थान-पतन का संक्षिप्त इतिहास भी है ।

आशा है सहृदय पाठकों को मेरा यह छोटा-सा प्रयास निश्चय ही पसन्द आयेगा । शीघ्रता के कारण यदि इस कृति में कुछ भूलें रह गई हों तो विद्वद्वृन्द मुझे उसकी अवश्य सूचना देने की कृपा करें, जिससे अगले संस्करण में उन्हें ठीक किया जा सके ।

इस कार्य में मुझे आचार्य श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूं । श्री 'रवि' बाबू एवं श्री 'महारथी' जी ने जिस सौजन्य से पुस्तक के मुद्रणादि का कार्य किया उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

जय कृष्ण कुटी,
१७०१, चान्दनी चौक, दिल्ली-६

दिनांक : १५ अगस्त १९७२

विदुषां वशंवदः
परमानन्द पाण्डेयः

श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ १९ ॥

शुक्ल यजुर्वेद संहिता २३ अध्यायः

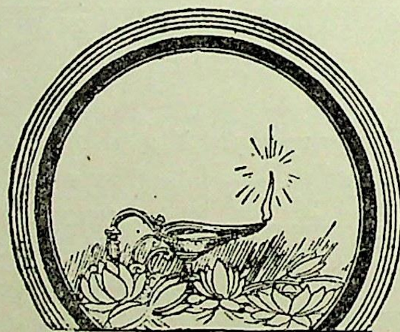
गणों (प्रजा गणों) के मध्य में हम तुझ गणपति का आह्वान करते हैं। प्रिय मनुष्यों के मध्य में हम तुझ प्रिय शासक (पति) का आह्वान करते हैं। सुखनिधियों के मध्य में हम तुझ निधिपति का आह्वान करते हैं। हे प्रकाश रश्मि अथवा शिव

We invoke you as Ganapati amongst the Ganas (people);
We invoke you as the beloved ruler amongst the human beings so dear;
We invoke you as the lord of treasures amongst all treasures of happiness;

स्वरूप (वसु) हम तेरा आह्वान करते हैं। तू अन्न (गर्भ) को धारण करने वाला है। हम तेरे द्वारा धारण किये हुए अन्न को आकृष्ट करके अपने में डालते हैं। तू भी धारित अन्न को (प्रजा के लिए) आकर्षित कर (पृथ्वी में) डालता है।

We invoke you Oh ray of light or the benefactor (Vasu) !

You are the sustainer of all grains which we draw into ourselves; the grains which you send forth into the womb of earth (for the people).





राष्ट्रगीतम्

जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता !
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग;
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधि तरंग;
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे;
गाहे तव जय गाथा !
जन-गण मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता !
जय हे, जय हे, जय हे; जय जय जय हे !






अमर
हिन्द





कतिधा परिवर्तिता दिल्ली

एषा दिल्ली नगरी स्वतन्त्रस्य भारतस्य राजधानी पदमध्यास्ते । अस्या बहुभिः शासकैः स्व-स्व-रुच्या वहुविध नामा कृतम् । दृष्टं ह्यनया नगर्या वारं-वारमुत्थान पतनञ्च । एषा बहुधा विनिर्मिता विनष्टाच ।

दिल्ली के परिवर्तन—

यह दिल्ली नगरी स्वतन्त्र भारत की राजधानी के पद को सुशोभित कर रही है। अनेक शासकों ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार इस नगरी को विविध नामों से अलंकृत किया है। इसने अपने जीवन में अनेक उत्थान और पतन देखे हैं। बार-बार यह बनी और बिगड़ी है।

VICISSITUDES OF DELHI—

The city of Delhi enjoys the honour of being the capital of free India. Many rulers adorned this city with various names according to their own liking. This old city has seen several changes and upheavals in its long period of history. It flourished many a time and gone to wreck as well.





पुरा पाण्डवानां पाञ्चाल्या सह परिणयानन्तरं हस्तिनापुराधिपतिर्धृतराष्ट्रः स्व-कुलोत्पन्नं विरोधमुपशामयितुं तदानींतनं जन-शून्यं खाण्डवप्रस्थं स्वायत्तीकर्त्तुं तत्र च नूतनामेकां पुरीं विरचयितुं पाण्डुतनयात् अजिज्ञपन् ।

प्राचीनकाल में, पाण्डवों द्वारा द्रौपदी के साथ विवाह किये जाने के पश्चात्, अपने कुल में उत्पन्न विरोध को शान्त करने के लिए, हस्तिनापुराधिपति धृतराष्ट्र ने पाण्डु-पुत्रों को, जन-शून्य खाण्डवप्रस्थ पर अधिकार करके वहाँ एक नवीन नगरी का निर्माण करने की आज्ञा दी।

In ancient times after the marriage of the Pandavas with the Princess Draupadi, Dhritrashtra, the blind King of Hastinapur, in order to avoid disharmony in the royal family asked the sons of Pandu to occupy the barren land of Khandava Prastha and found a new city there.

अथ धर्म-सूनुर्युधिष्ठिरः कृष्णद्वैपायन पुरः सरं स्वकीयैश्चतुर्भिर्भ्रातृभिः साकं खाण्डवप्रस्थं प्रविवेश । तत्रचतदानीमिन्द्रप्रस्थ नाम्ना विश्रुतां स्वकीयां राजधानीं व्यरचयत् ।



तब धर्म-पुत्र युधिष्ठिर ने कृष्ण द्वैपायन व्यास तथा अपने चारों भाइयों सहित खाण्डवप्रस्थ में प्रवेश किया और इन्द्रप्रस्थ नाम से प्रसिद्ध अपनी राजधानी का निर्माण किया।

Then Yudhishthira along with his four brothers and Krishna Dwaipayan Vyas entered the territory of Khandava Prastha and founded there his capital city which came to be known as Indraprastha.

नन्वियं नगरी स्वर्णकक्षाधिरूढा स्वमहिम्नाऽद्वितीया आर्यावर्तैक प्रधानभूता महाभारते समुपवर्णिता वर्तते। उक्तञ्च महाभारते—

स्वर्ण कक्षा में आरूढ़ यह नगरी अपनी-महिमा से अद्वितीय और आर्यावर्त की प्रधान नगरी के रूप में महाभारत में वर्णित है। महाभारत में इसके सम्बन्ध में कहा है :-

This city has been graphically described as an unparalleled and the prime city of Aryavarta on account of its grandeur representing the golden age. In Mahabharata the city has been described as follows:-

"विरोचमानं विविधैः पाण्डुरैर्भवनोत्तमैः।
तत् त्रिविष्टप-संकाशमिन्द्रप्रस्थं व्यरोचयत्॥"

"विविध प्रकार के उत्तम स्वर्णिम भवनों से शोभित यह इन्द्रप्रस्थ नगरी इन्द्रपुरी के समान शोभायमान है।"

"This city of Indraprastha, adorned by excellent golden buildings of various types looks like the beautiful Indrapuri."

अस्यां पुर्यां बह्वो विविध वर्णरोचमानाः पंकजबहुला जलाशया अधुनापि विराजन्ते।

इस में विविध वर्णों के कमल पुष्पों से शोभित अनेक जलाशय आज भी विद्यमान हैं।

This city is even today decorated with a number of tanks full of lotuses of different colours.

एवं किलैतिहासिकाः संगिरन्ते यत्खलु पाण्डवराज्यावसानोत्तरमद्यावधि "दिल्ली" अष्टधा निर्मिता ध्वस्ता परिवर्तिता चेति।

इस प्रकार इतिहासकारों का कहना है कि यह 'दिल्ली', पाण्डवों के राज्य के बाद, आठ बार नष्ट, भ्रष्ट एवं परिवर्तित हुई है।

Thus historians hold the view that this city of Delhi, after the reign of Pandavas, was built, wrecked and changed eight times.

— प्रथमं परिवर्तनम् —

यद्यप्यस्य पत्तनस्य नाम कदा कथं च दिल्लीति सञ्जातम् इति विवादास्पदमेव किन्तु सम्यग् विवेचनानन्तरं प्रतीयते यत् पञ्चाशत् खृस्ताब्दतः प्राग् दिल्लु नृपतिना स्वनाम्नैव "दिल्ली" ति संज्ञा दत्तेति सयुक्तिकमेवेदं प्रतिभाति ।

पहला परिवर्तन —

इस नगर का नाम दिल्ली कब और कैसे हुआ — यद्यपि यह अभी तक विवादास्पद ही है, किन्तु सम्यक् विवेचन के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि पचास ईसवी से पूर्व दिल्लु नामक राजा ने अपने नाम से ही इसका 'दिल्ली' नाम रक्खा। यह युक्तियुक्त भी प्रतीत होता है।

THE FIRST CHANGE—

How and when this city acquired the name of Delhi is shrouded in mystery, but after careful research it becomes almost a settled fact that the name "Delhi" was given to this city by King "Dillu" who ruled it about 50 B. C.

— द्वितीयं परिवर्तनम् —

द्वितीयानंगपाललेखतः प्रतिभाति यत् पञ्चाशदधिकदशशत ख्रिस्ताब्दे यद् द्वितीयं परिवर्तनमभूत् तञ्च लालकोट (पृथ्वीराजनृपतिनिर्मापित रक्त दुर्गम्) रायपिथोरेति च नाम्ना व्यवहृयते। सा च नगरी पृथ्वीराजराजधानी यत्र च यवनानां प्रथममाक्रमणमभूत् किंचातो लालकोट प्राचीरादेव बहिरागत्य आर्यवीरैः शत्रुसैन्यसमूहः समन्ततो ह्याक्रामितः यत्परिणामतोहि आक्रमणकारी शहाबुद्दीनाख्यो यवननृपः प्रपलायितः किञ्च कालांतरे कालवशात् पृथिवीराज नरपति निर्जित्य नगराधिपः सञ्जातः। दास वंश्यानां यवन नृपाणां चात्रैव राजधानी सञ्जाता अत्रैव प्रसिद्धा सुलताना रजिया नाम्नी राज्ञी राज्यमकरोत्।

दूसरा परिवर्तन—

द्वितीय अनङ्गपाल के एक लेख से ऐसा विदित होता है कि सन् १०५० में जो दूसरा परि-

THE SECOND CHANGE—

From an inscription ascribed to Anang Pal the second it transpires that the second

वर्तन हुआ वह लाल कोट (पृथ्वीराज द्वारा निर्मित लाल दुर्ग) या राय पिथौरा नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही पृथ्वीराज की राजधानी थी जहाँ कि यवनों का प्रथम आक्रमण हुआ था। इसी लालकोट की प्राचीरों से बाहर आकर शत्रु की सेना पर चारों ओर से आक्रमण करके आर्य वीरों ने आक्रमणकारी मुसलमान बादशाह शहाबुद्दीन को परास्त करके भगा दिया था परन्तु कुछ समय बाद उसी ने पृथ्वीराज को परास्त करके इस नगर पर अधिकार कर लिया। गुलाम वंश के बादशाहों की यही राजधानी बना। यहीं रह कर प्रसिद्ध सुल्ताना रज़िया बेगम ने अपना शासन चलाया।

city of Delhi sprung up into existence some time about 1050 A. D. at the site of Lal Kot (the Red Fort constructed by Prithvi Raj) which came to be known by the name of Rai Pithora. This city was the capital of the Kingdom of Prithvi Raj and bore the brunt of muslim attack. It was from within the fore-walls of this city that the Rajput heroes inflicted a crushing defeat on the forces of the invading Muslim King Shahabuddin which made him seek safety in flight. By turn of the cycle of fortune, the same Shahabuddin defeated King Prithvi Raj and occupied this city. Thence forward the city became the capital of the Kings of Slave dynasty and it was at one time the seat of the court of the celebrated Sultana Razia.

— तृतीयं परिवर्तनम् —

खिजिरुद्दीन कैकुबाद नरपतिः प्राक् त्रयोदशशताब्दीतो दुर्गसहितं किलोकड़ीति नाम्नीं नगरीं रचितवान् यद्ध्वंसावशेषेषु अद्यापि किलोकड़ी ग्रामस्तिष्ठति यो हि वर्तमान देहली नगरात् दरियागञ्जाभिमुखमोखलाख्य स्थान समीपे वर्तते; यत्र साम्प्रतमपि तृतीय-परिवर्तन भग्नावशेषा दृष्टिगोचरतामायान्ति । वर्तते चात्र हुमायूंनरपतिसमाधि स्थलम् ।

तीसरा परिवर्तन –

खिजिरुद्दीन कैकुबाद नामक बादशाह ने तेरहवीं शताब्दी में दुर्ग सहित किलोकड़ी नामक नगर की रचना की, जिसके खंडहरों पर आज भी इसी नाम का गाँव मौजूद है जो वर्तमान दिल्ली नगर से दरियागञ्ज की ओर ओखला के समीप है; जहाँ अभी भी तृतीय परिवर्तन के भग्नावशेष देखे जा सकते हैं। यहीं बादशाह हुमायूँ का मकबरा है।

THE THIRD CHANGE—

In the beginning of the 13th century A. D. Sultan Khizruddin Kaikubad laid the foundation of a fort at the site of Kilokri and the third city of Delhi sprung out about this place. Its ruins can still be seen round about Kilokri a village situated near Okhla. Humayun's Tomb is also situated near this place.

— चतुर्थं परिवर्तनम् —

त्रयोदशशताब्द्यान्तिमे काले अलाउद्दीनखिलजी नृपेण सीकरीति नाम्ना नगरं स्थापितं तत्तु पृथ्वीराज निर्मापित लालकोट समीपे एव वर्तते। किञ्चित्कालानन्तरं तयोरन्तराले सुदृढ़ दुर्गमपि निर्मापितं येन द्वयोः नगरयोः सुशोभना सुषुमा संजाता संयोगाच्चैकतामगात् देहली। विस्तृतत्वेन शोभया च तदा बगदादादि महापत्तनान्यपि अतो लज्जन्तेस्म इति ऐतिहासिकाः कथयन्ति।

चौथा परिवर्तन —

तेरहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में अलाउद्दीन खिलजी ने पृथ्वीराज द्वारा निर्मित लालकोट के समीप ही सीकरी नामक नगर बसाया तथा कुछ समय बाद इन दोनों के बीच में एक सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण भी कराया जिससे दोनों नगरों की शोभा

THE FOURTH CHANGE—

At the close of the thirteenth century Alauddin Khilji founded yet another city named Sikari close to Lalkot built by Prithvi Raj. A strong fort was also built by him between these two cities which also enhanced their beauty and helped in the natural

में वृद्धि हुई। साथ ही नगर का विस्तार भी स्वाभाविक रूप से हो गया। ऐतिहासिकों का कहना है कि इसके विस्तार और शोभा के कारण बग़दाद आदि महानगर भी इसके सामने लज्जित होते थे।

expansion of the city. Historians hold the view that the expansion and beauty of the city of Baghdad was insignificant compared to the expansion and beauty of this city.

धनलोलुपेन मुगलतैमूरलंगाभिधेयेन १३९२ खिृस्ताब्देऽत्राक्रमणं कृतंविजयोन्मत्तेन तेन कारितश्च साधारण जनतायाः हत्याकाण्डः सर्वस्वापहारश्च। एवमुन्मत्तोहि स सोल्लासो मन्त्रिभिस्सह हृतश्रीकनगरं भ्रमणार्थं तत्र प्रविष्टः समन्तात् सुरम्याणि मण्डलाकृतिकानि सुदृढान्युन्नतानि गतश्रीकाणि हर्म्याणि समवलोकयन् पुरपरिभ्रमणश्चान्तः स यवन-प्रधान-प्रणतिस्थान (मस्जिद) माससाद दृष्ट्वा च तत्र प्रतीक्षापरान् यवनाचार्यान् योग्योपहारैः समतोषयन् इति इब्नबतूत महोदय लेखेन प्रतीयते।

धनलोलुप मुग़ल बादशाह तैमूर लंग ने १३९२ ई० में इस महानगरी पर आक्रमण किया

According to the writings of Ibnabatut, greedy Mughal King Taimur Lang attacked

श्रौर विजयोन्मत्त होकर खूब लूट-मार श्रौर जन-साधारण की हत्याएं कीं। इस प्रकार अपने मंत्रियों के साथ वह बड़े उल्लास में भर कर, भ्रमण के लिए प्रविष्ट हुआ तो उसने वहाँ चारों ओर मण्डलाकार ऊंचे ऊंचे विशाल भवन देखे। इसके बाद वह यहाँ की प्रमुख मस्जिद में गया और वहाँ प्रतीक्षारत मुल्लाओं और मौलवियों को इनाम-इकराम देकर सन्तुष्ट किया ऐसा इब्न बतूत के लेख से प्रतीत होता है।

this Great city in 1392 A.D. On achieving victory he awarded his army-men the entire city and its people to collect wealth and effect killings to their full. Thus, accompanied with his ministers and army-men, when he entered this great city, he saw great buildings encircled with domes. After this he went to the famous mosque of this great city and offered rewards and presents to all the mullas and maulvis present there.

पृथ्वीराज निर्मितनगर (लालकोट) समीपे एवेतन्नगरं वर्तते यस्य परितोह्ये-कादशहस्त परिमितविस्तृतमनेक प्रकोष्ठकाभिव्याप्तं प्राचीरं सुविभाति एषु प्रकोष्ठकेषु सुनिहिता ह्यन्नराशिः महतापि कालेन न विकृतिमेति इति जनश्रुतिः।

पृथ्वीराज निर्मित नगर (लालकोट) के समीप ही यह नगर है जिसके चारों ओर ग्यारह-ग्यारह हाथ के अनेक प्रकोष्ठों से व्याप्त एक सुव्यवस्थित प्राचीर शोभित है। इन कोठों में भरी हुई अन्न राशि बहुत समय तक नहीं बिगड़ती थी ऐसी जन-श्रुति है।

This city is near the Lalkot founded by the Emperor Prithvi Raj. It was surrounded by big wall containing beautiful store-houses measuring 5 to 6 yards each way. It is said that grains stored in these store-houses did not get spoiled for a long time.

वर्तमान देहलीतो गुरुग्राम गामिनो मार्गस्य वामतः प्रायः क्रोशत्रयदूरस्थः शाहपुराभिधो ग्रामः सीकरीदुर्गं स्मारयति। जहाँपनाह महाराजकीय खण्डित नगरमार्गो लालकोट भग्नावशेषञ्च मध्ये समायान्ति। पृथ्वीराजनिर्मितस्तूपात् (कुतुब मीनार) वामतो लालकोट स्थाने पृथ्वीराजनिर्मितदुर्गस्य द्वारमासीत्।

वर्तमान दिल्ली से गुड़गाँव जाने वाले मार्ग के बाईं ओर प्रायः तीन कोस दूर स्थित शाहपुर ग्राम सीकरी के दुर्ग की याद दिलाता है। जहाँपनाह

On the left side of the road leading from the existing Delhi city to Gurgaon at a distance of about 6 or 7 miles a small village

महाराजकीय मार्ग तथा लाल कोट के भग्नावशेष बीच में ही आते हैं। पृथ्वीराज द्वारा निर्मित स्तूप (कुतुब मीनार) से बाईं ओर लाल कोट स्थान पर पृथ्वीराज द्वारा बनाये दुर्ग का द्वार था।

Shahpur by name is situated which is now the memorial of the Sikari Fort. The ruins of Jahan Panah, the Royal Highway and the Lal Kot can be seen on the way. To the left of the great minaret (Qutub Minar), built by Prithvi Raj, there was the Gateway of the fort of Prithvi Raj at the place of Lal Kot.

— पञ्चमं परिवर्तनम् —

गयासुद्दीनतुगलकयवननृपेण १३२१ खिृष्टाब्दे स्तूपात् दक्षिणतः प्रायो गव्यूतिमतिक्रम्य "तुगलकाबाद" इतिनाम्ना बहुवर्षायासेन निर्मापितमभूत् यस्य ध्वंसावशेषाः साम्प्रतमपि दृष्टिपथमायान्ति। नगरमिदं तत्पुत्र मुहम्मद तुगलक शासनकाले एव नाशमुपागतः।

पांचवां परिवर्तन —

सन् १३२१ ईसवी में कुतुब मीनार से प्रायः एक-दो कोस दूर ग़यासुद्दीन तुग़लक ने बहुत वर्षों के परिश्रम से 'तुग़लकाबाद' नामक नगर का निर्माण कराया जिसके ध्वंसावशेष आज भी दिखाई पड़ते हैं। यह नगर उसके पुत्र मुहम्मद तुग़लक के समय में ही नष्ट हो गया।

THE FIFTH CHANGE—

The city of Tughlakabad was got built by Gayasuddin Tughlak in the year 1321 A.D. at a distance of about 3 miles from Qutub Minar within a period of several years. Its ruins can be traced even today. This city was rendered desolate during the reign of Gayasuddin Tughalak's son.

महात्मा शेख निजामुद्दीन औलिया महोदयोनगरनिर्माणकाले गयासुद्दीनराज-सभामलञ्चकार किन्तु कालान्तरे परस्परं वैमनस्यँ जाते शशाप राजानं तत्रत्य गुर्जरवांस्त च सोऽयं शापः सर्वात्मना पूर्णोऽभूत् तन्नाशस्तु तदैव तत्पुत्र द्वारासंजात। गुर्जराणामपि दिनैः दिनैः हानिरभूत्।

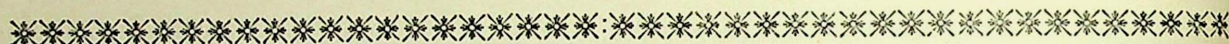
महात्मा शेख़ निजामुद्दीन औलिया नगर-निर्माण के समय ग़यासुद्दीन की राजसभा की शोभा बढ़ाते थे। परन्तु बादशाह से मन-मुटाव होने पर एक समय शेख़ साहब ने बादशाह को तथा वहाँ की गूजर बस्ती को शाप दे दिया। परिणाम स्वरूप तुग़लकाबाद का नाश तो ग़यासुद्दीन के पुत्र द्वारा ही हो गया तथा गूजरों की भी दिन प्रति दिन हानि होती चली गई।

The famous Sheikh Nizamuddin Aulia adorned the Durbar of Gayasuddin Tughlak when the city was being built up. But due to the ill feeling created between the Aulia and the Sultan the former cursed the latter and the Gujar population of the area. As a consequence of the curse inflicted by the Aulia, Gayasuddin met his end at the hands of his own son, and the Gujar population started receding day by day.

"हनूज दिल्ली दूरस्त" अधुनातु दिल्ली दूरे इत्युक्तिर्हि औलिया महोदयस्यैव।

इस सिलसिले में औलिया महोदय ने यह उक्ति कही थी कि 'हनूज़ दिल्ली दूरस्त' अर्थात् अभी दिल्ली दूर है। यह उक्ति आज एक मुहावरा बन गई है।

In the context of course episode the Aulia had said "Hanooz Dilhi Door Ast, i.e. Delhi is still far off". This sentence has now gained the currency of a proverb.



स्ववध षडयन्त्रसमाचारभीतोगयासुद्दीननृपो यदा तुगलकाबादनगरं त्वरितमागतो दण्डयितुं औलिया महोदयं । तदागमनसमाचारं निशम्य तदैवोक्तंमौलिया महोदयेन "अधुनातु दिल्ली दूरे ।" इति । अर्थात स मां दण्डयितुमागच्छति किन्तु दिल्ली दूरे वसति स तु मार्गे एव समाप्तिं गमिष्यति इति ।

अपने वध के षडयन्त्र के समाचार से डर कर औलिया महोदय को दण्ड देने के अभिप्राय से जब वह दिल्ली की ओर आ रहा था तो इसे सुन कर निज़ामुद्दीन औलिया महोदय ने कहा था कि 'अभी दिल्ली दूर है'। कहते हैं कि बादशाह औलिया महोदय को दण्ड देने के लिए दिल्ली पहुंच ही नहीं पाया, रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई।

While Gayasuddin Tughlak was returning Delhi on hearing the rumour about a conspiracy by the Aulia against him the Aulia had said, "Hanooz Dilli Door Ast i.e. Delhi is still far off," The story has it that the Sultan could never reach Delhi to punish the Aulia and died on the way.

इन्द्रप्रस्थोदकहर (नहर) समीपे औलिया महोदयस्य समाधिरस्ति ।



इन्द्रप्रस्थ नहर के समीप महात्मा निज़ामुद्दीन की समाधि आज भी मौजूद है, जहाँ प्रतिवर्ष हज़ारों की संख्या में उनके भक्त आकर उस पर श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं।

The tomb of Nizamuddin is situated on the bank of a dry canal near Indraprastha where thousands of devotees of the Aulia assemble every year to offer flowers at his tomb.

— षष्ठम् परिवर्तनम् —

मुहम्मद तुगलकेनैव गयासुद्दीनानन्तरं सिंहासनारूढ़ेन तुगलकाबाद दक्षिणप्राचीर संलग्नं सदुर्गं नगरम् निर्मापितम् यत्तु "आदिलाबादेति" नाम्ना प्रसिद्धम्। किञ्च प्रजा पीडनपरस्य तस्य शासनकाले एव नगरमिदं हतश्रीकं जातम्। नृपोयं अत्याचारपरः परमलोभी सहसैव दक्षिणदेवगिरिपत्तनं राजधानीत्वेन स्वीकृत्योद्घुष्टमनेन यत्सर्वोऽपि प्रजाजनः ससाधनस्तूर्णं तत्रोपतिष्ठतामिति। दीनकः प्रजाजनो दुःखसागरे न्यमज्जदिव महच्च कष्टमनुभूतं तत्प्रयाणे। अनेन पृथ्वीराजनिर्मितं देहलीनगरं तथा ध्वस्तं यथा नैकः सार-

मेयोऽपि तत्रावसत् । दौर्भाग्यादेव दुष्कालोऽप्यजृम्भत । हिमवन्तं गिरमुल्लंघ्य चीनदेशाक्रमणमप्येतस्यैव नृपस्य मनस्यायातम् । पित्तलरंगादिनिर्मिता राजमुद्रा अप्यनेनैव नृपेण प्रचालिताः प्रजाजनश्च तद् ग्रहणे हठाद् विवशतां नीतः । फलतो देशेदुःखं दारिद्रयञ्च व्यवर्धत । तुगलकाबादनगरस्य ध्वंसावशेषेष्वधुनापि ता लभ्यन्ते ।

छठा परिवर्तन—

मुहम्मद तुग़लक ने ग़यासुद्दीन के बाद सिंहासनारूढ़ होने पर तुग़लकाबाद की दक्षिण प्राचीर से लगा हुआ 'आदिलाबाद' नाम से प्रसिद्ध नगर का निर्माण दुर्ग सहित कराया। प्रजा-पीड़क इस बादशाह का यह नगर इसके शासन काल में ही श्रीहीन हो गया। महान अत्याचारी और परम लोभी यह बादशाह देवगिरिपत्तन को अपनी राजधानी स्वीकार करके चल दिया तथा सम्पूर्ण प्रजा-

THE SIXTH CHANGE—

After the death of Gayasuddin, Mohammad Tughlak ascended the throne. He built a new city and a fort adjacent to the southern wall of Tughalakbad and gave it the name "Adilabad". But the existence of this city came to an end along with the expiry of his troublesome reign. Mohammad Tughalak was a very cruel and greedy king. One day an idea of establishing his capital at

जनों को आदेश दिया कि सभी अपने साजो-सामान के साथ वहीं पहुंचें। दीन प्रजाजनों ने वहाँ जाने में महान् कष्ट का अनुभव किया। इस प्रकार पृथ्वीराज निर्मित दिल्ली नगरी वीरान हो गई और एक शृगाल तक भी वहाँ नहीं रहा। दुर्भाग्य से इसी समय दुर्भिक्ष भी पड़ा। इसी बादशाह ने हिमालय पर्वत को पार करके चीन देश पर आक्रमण करने की योजना बनाई थी। इसी ने पीतल तथा रांग आदि की मुद्राएं भी प्रचलित कीं तथा प्रजा को उन्हें लेने के लिए बाध्य किया। परिणाम यह हुआ कि देश में दुःख और दरिद्रता बढ़ गई। वे सिक्के आज भी तुग़लकाबाद के ध्वंसावशेषों में प्राप्त हो जाते हैं।

Deogiri in the South came to his mind. He, at once, ordered all his subjects to move with all their belongings to Deogiri. The poor subjects experienced indescribable difficulties and hardships. Thus the splendid city, Delhi, of Prithvi Raj was destroyed and not even a jackal was to be found there, Unfortunately at that very time Delhi had to face an acute condition of famine. Again an idea struck to the mind of the Sultan to invade the country of China having crossed over the Himalayas. The Sultan issued copper and lead coins and forced his subjects to accept them which caused poverty and troubles to increase all the more in the country. Such coins are still to be found occasionally in the ruins of Tughalakabad.

— सप्तम् परिवर्तनम् —

एतद् फिरोजाबादेति समाख्यायते। मुहम्मद तुगलक पुत्रेण फिरोजशाहनृपेण नगरमिदमुक्तदेहलीमुत्तरेण वर्तमान देहलीनगरं निकषा १३५० तमेशवीयवर्षे संस्थापितमभूत्। वर्तमानदेहलीनगरस्य दक्षिणेभागे जामामस्जिद, कालीमस्जिद, सीतारामबाजारादि संगतं तस्मिन् फिरोजाबादे संमिलितमासीत्। वर्तमान देहलीद्वाराद् बहिः प्रायः सहस्र हस्तमितभूमिभागादारात् वर्तमान मौलाना आजाद मैडिकल कालेजाभिमुखं फिरोजशाहनिर्मितं दुर्गं दर्शनीयस्थानेष्वन्यतममस्ति।

सातवां परिवर्तन—

मुहम्मद तुग़लक के पुत्र फ़िरोज़शाह ने सन् १३५० ईसवी में दिल्ली के उत्तर में फ़िरोज़ाबाद नाम की राजधानी का निर्माण किया। वर्तमान

THE SEVENTH CHANGE—

Mohammad Tughalak's son Feroz Shah built his capital in 1350 A.D. to the north of the present Delhi and called it

दिल्ली नगर के दक्षिण में स्थित जामा मस्जिद, काली मस्जिद, सीताराम बाज़ार आदि भाग उसमें सम्मिलित थे। वर्तमान दिल्ली दरवाजे से प्रायः पाँच सौ गज़ आगे मौलाना आज़ाद मैडिकल कालेज के सामने फ़िरोज़शाह निर्मित फ़िरोज़शाह कोटला एक मोहक और दर्शनीय स्थान है।

Ferozabad. The southern portion of the present Delhi which includes the Jama Masjid, the Kali Masjid and the Sitaram Bazar, formed a portion of Ferozabad. On the opposite side of the present Maulana Azad Medical College, outside the Delhi Gate, stands the Fort of Feroz Shah which is called Feroz Shah Kotla. On the top of the Fort a stone pillar of Ashoka is erected with Brahmi inscription on it.

— अष्टम परिवर्तनम् —

शाहजहांनृपतिनिर्मितत्वेन शाहजहांनाबादाख्यम्। पञ्चममुगलसम्राटशाहजहाँ-नृपेण १६३८ खीष्टाब्दे अस्य नगरस्य परिवर्तनं समारब्धम्।

आठवां परिवर्तन—

बादशाह शाहजहाँ द्वारा निर्मित शाहजहाँ-नाबाद नाम से सन् १६३८ ई० में दिल्ली नगर में आठवाँ परिवर्तन प्रारम्भ हुआ।

THE EIGHTH CHANGE—

The city of Delhi saw the eighth change in the year 1638 when Shah Jahan built another city by the name of Shah Jehanbad.

— नवम् परिवर्तनम् —

एकादशाधिकोनविंशतिर्वत्सरे श्री जार्जपञ्चम महोदयेन नवदिल्या (न्यू दिल्ली) निर्माणार्थमाज्ञा प्रदत्ता। सैषा नवीना दिल्ली साम्प्रतम् भारतस्य राजधानी भूता विराजते नव वधूरिव।

नौंवां परिवर्तन—

सन् १९११ के नवम्बर में श्री जार्ज पंचम महोदय ने नौंवीं दिल्ली (नई दिल्ली) के निर्माण

THE NINTH CHANGE—

In 1911 King George V, the British Ruler of India ordered the construction of

की आज्ञा दी । यही नई दिल्ली १९४७ से स्वतन्त्र भारत की भी राजधानी बनी ।

the ninth city which is now popularly known as New Delhi and is the seat of the Government of India since the year 1947 when India won her freedom.

सन् १९४७ तमे वर्षे वहूनां देशभक्तानां, नेतृणां चात्माहुतिभिः, यदा भारतं स्वतन्त्रं जातं तदातः इयं स्वतन्त्र भारतस्य राजधानी अस्ति, इयं हि द्विधा विभाजिता अस्ति नव दिल्ली प्राचीना दिल्ली च ।

सन् १९४७ में बहुत से देश भक्तों और नेताओं की आत्माहुति से जब भारत स्वतन्त्र हुआ तब से ही यह स्वतन्त्र भारत की राजधानी है। यह दो भागों में विभक्त है : नई दिल्ली तथा पुरानी दिल्ली ।

Delhi enjoys the unique position of the capital of free India since 1947 when the country achieved independence as a result of the sacrifices made by a number of patriots and leaders. The city of Delhi is divided into two parts i.e. New Delhi and the old Delhi.

अत्र प्राचीना नवीनाश्च बहवः स्मारकाः सन्ति यान् दृष्टुं बहवो देशीयाः विदेशीयाश्च जनाः प्रतिदिनं समागच्छन्ति । इमानि कानिचिद् भवतानि यथा—

पाण्डवनां दुर्गम्, पृथ्वीराजस्य दुर्गम्, लौहस्तम्भ, योगमायामन्दिरम्, वेधशाला, हुमायोः समाधिः, रक्तदुर्गम् (लाल किला), यवनानां महत् पूजा स्थलम्, जैनमतानुयायिनाम् जैनमंदिरं, आपागंगाधर शिवालयः, गुरुद्वारम् ।

यहाँ अनेक प्राचीन स्मारक और नवीन भवन हैं जिन्हें देखने के लिए देश और विदेश के बहुत से लोग प्रतिदिन आते हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

पुराना किला, पृथ्वीराज का किला, लौह स्तम्भ, योग माया का मन्दिर, वेधशाला (जन्तर-मन्तर), हुमायूँ का मकबरा, लाल किला, जामा मस्जिद, जैन मन्दिर, आपा गङ्गाधर का शिवा-

Delhi abounds in a number of old and new buildings of historical importance and places of attraction. Thousands of persons come from far and near every day to visit these places. Some of the important old places are as under :-

The Old Fort, Fort of Prithvi Raj, Iron Pillar, Yogmaya Temple of Mehrauli, Obser-

लय (गौरी शंकर का मन्दिर), गुरुद्वारा गुरु तेग़ बहादुर।

vatory or the Jantar Mantar, Humayun's Tomb, Red Fort, Jama Masjid, Jain Temple, Appa Gangadhar temple of the temple of Gauri Shankar, Gurudwara Sisganj.

आधुनिकानि आकर्षणस्थलानि—

राष्ट्रपति भवनम्, संसद भवनम्, वस्तु संग्रहालयः, जन्तु संग्रहालयः, गान्धी दर्शनम्, गान्धी समाधिः (राजघाट), नेहरू समाधिः (शान्ति वन), लाल बहादुर शास्त्रेः समाधिः (विजय घाट), लक्ष्मीनारायण मन्दिरम् (बिड़ला मन्दिर), बुद्धोपवनम् (बुद्धा गार्डन) एवं बहु विधानि वर्तन्ते आकर्षकानि यानि विलोक्य जनाः स्वात्मानं परं धन्यं मन्यन्ते।

आधुनिक आकर्षण स्थल—

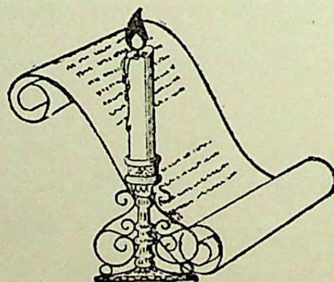
राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, वस्तु संग्रहालय (अजायब घर), जन्तु संग्रहालय (चिड़िया

Some modern places of importance :-

Rashtrapati Bhawan, Parliament House, Archæological Building, Zoological garden,

घर), गाँधी दर्शन, गाँधी-समाधि (राजघाट), नेहरू-समाधि (शान्तिवन), लाल बहादुर शास्त्री की समाधि (विजय घाट), लक्ष्मी नारायण का मन्दिर (बिरला मन्दिर), बुद्ध गार्डन, इस प्रकार के बहुत से आकर्षण हैं जिन्हें देख कर लोग अपने आपको धन्य मानते हैं।

Gandhi Darshan, Gandhiji's Samadhi (Raj Ghat), Nehru's Samadhi (Shanti Vana), Lal Bahadur Shastri's Samadhi (Vijay Ghat), Lakshminarayan Temple (Birla Mandir), Buddha Garden.



भारतवर्ष विविध सम्प्रदाय निवासिनः

आर्या ईसामसीयाश्च यवनाः जैन बुद्धजाः ।
सिक्खाश्च यत्र वर्तन्ते आर्यावर्तः स उच्यते ॥

भारत में विविध सम्प्रदायों के निवासी

जिस देश में आर्य (हिन्दू), ईसाई, जैन, बौद्ध और सिक्ख परस्पर मिल कर रहते हैं उसका ही नाम आर्यावर्त है।

People of different religions in India

The country which is the home of Aryans (Hindus), Christians, Muslims, Jains, Budhists and Sikhs is known as Aryavarta.

नव बिन्दुश्च वस्वांकाः वेदांकाः शैल तुर्यगाः ।
बाण संख्या क्रमेणोक्ता एते भारतवासिनः ॥

भारत के कुल निवासियों की संख्या १९७१ की जनगणना के अनुसार ५४,७९,४९,८०९ है।

The total population of India, according to the 1971 census is 54,79,49,809.

तर्को वसुश्च खं नेत्रे नव द्वौ वन्हिबाणकम् ।
वेदाश्चेति समाहासं आर्य संख्या प्रकीर्तिताः ।।

(आर्य) हिन्दुओं की ४५,३२,९२,०८६ संख्या है।

The population of (Arya) Hindus is 45,32,92,086.

षड्वेदाः तर्कतूर्यं खं दर्शने युग्मसंख्यकम् ।
महावीर मते मग्ना जैन धर्म परायणाः ।।

जैनों की संख्या २६,०४,६४६ है।

The population of the Jains is 26,04,646.

वेदानल नवः शैवस्तन्वाब्धिर्भूररिक्रमात् ।
यवनास्तत्र समायाताः मिलितास्त्वैकरूपतः ।।

मुसलमानों की संख्या ६,१४,१७,९३४ है।

The population of the Muslims is 6,14,17,934.



बाण वाह्नल भुजौ शशि दिग्गजवह्नयः ।
बौद्धाहि यत्र तिष्ठन्ति स देशो भारतस्मृतः ॥

बौद्धों की संख्या ३८,१२,३२५ है।

The population of the Budhists is 38,12,325.

युग्मवस्वाग्नि रामायुग द्वन्द्ववेदविधुर्युता ।
ईसामसीहा ते प्रोक्ताः ईशुधर्मावलम्बिनः ॥

ईसाइयों की संख्या १,४२,२३,३८२ है।

The population of the Christians is 1,42,23,382,

शैवांक सप्त वसवो समुद्रा बाण खं विधुः ।
आर्यावर्ते समुद्भूताः सिख पंथ प्रवर्तकाः ॥

सिक्खों की संख्या १,०३,७८,७९७ है।

The population of the Sikhs is 1,03,78 797.

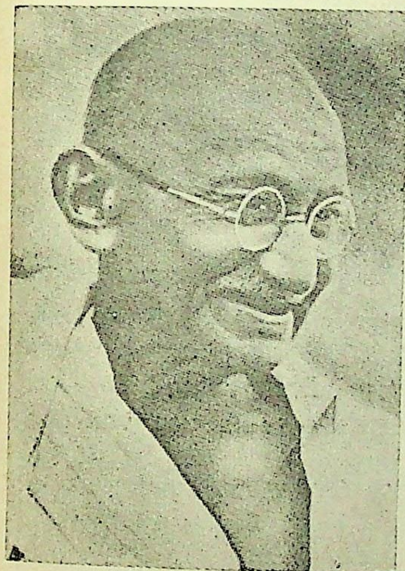


अन्य मतानुयायिनां २,१८,४५६ एवं धर्मनिरपेक्षाणाम् ३०,०८२ ।

अन्य मतावलम्बियों की संख्या २,१८,४५६ है तथा धर्म निरपेक्ष भावना रखने वालों की संख्या ३०,०८२ है ।

The population of believers in other faiths is 2,18,456 and those who believe in secularism are 30,082.





— गान्धी जीवन दर्शनम् —

गान्धी जीवन दर्शनस्य पञ्चसूत्राणि सन्ति, तानिच पञ्चव्रतात्मकानिः

प्रथमं व्रतं— सत्यव्रतम् :

विपदागच्छतु किंवा सम्पदिह तिलाञ्जलिं ददताम्,
प्राणाः कण्ठगताः स्युः सत्यं जगति न कदापि हातव्यम् ।

गाँधी दर्शन पांच सिद्धान्तों पर आधारित है जिन्हें पांच व्रतों के नाम से भी जाना जाता है।

पहला व्रत : चाहे विपत्ति आए अथवा सम्पत्ति हमें तिलांजलि क्यों न दे दे, प्राण गले

The Gandhian philosophy is based on five principles popularly known as five vrates :-

First Vrate is of the Truth or Satyam which inspires one not to leave the path of



तक भी आ जायें किन्तु जगत में सत्य को कदापि नहीं छोड़ना चाहिए।

righteousness in boundless joys and endless sorrows.

द्वितीयं व्रतम्— अहिंसा व्रतम् :

मनसा, वचसा, क्रियया, कस्याप्यहितं न कर्तव्यम्,
आत्मा सर्वत्र समः मा हिंस्यात् खलु सर्वाणि भूतानि।

दूसरा व्रत : मन, वचन और कर्म से किसी की बुराई नहीं करनी चाहिए। आत्मा सभी में एक ही है, किसी भी प्राणी की हिंसा न करो।

The second principle is of nonviolence which teaches one not to speak ill of any body neither in thoughts, nor in words and nor in deeds. Every living being has a soul and one should not use voilence towards any one.

तृतीयं व्रतम्— अपरिग्रह व्रतम् :

यावज्जठरं भ्रियते तावदेव नः स्वत्वं भवति, पर-जठराणि



प्रशोष्य यावतोदरपूर्तिः स्वार्थाय परिग्रहो न कर्तव्यः ।

तीसरा व्रत : जितने मात्र से हमारा पेट भर जाय उतने तक ही हमारा अधिकार होता है, दूसरों के पेट काट कर, अपने स्वार्थ के लिए अन्धाधुन्ध संग्रह नहीं करना चाहिये ।

The third principle is of renunciation which teaches one to own only as much as is barely necessary for one's own living and one should not try to hoard to the maximum out of one's selfish ends at others cost.

चतुर्थं व्रतम्— शौचव्रतम् :

शुचि हृदयं शुचि चरितं भोजन वसने शुचीनि सदनञ्च,
शौचं दैविक धर्मः शुचिभिः सर्वैः सदैव भवनीयम् ।

चौथा व्रत : हृदय शुद्ध हो, चरित्र शुद्ध हो, भोजन वस्त्र और घर भी शुद्ध हों । शुद्धता दिव्य गुण है अतः सब को सदा शुद्ध रहना चाहिये ।

The fourth principle is of purity. Purity of heart and mind, purity of character, food and in every sphere of life. Purity is a divine virtue, one should always remain pure.

पञ्चम व्रतम्— अरहस्य व्रतम् :

यत् खलु मनसि, तद् वचसि क्रिया च सदैव वचनमनुसरति,
मनोवचःक्रियैक्ये न स्याल्लोके नः किमपि रहस्यम् ।

पांचवां व्रत : जो मन में है वही वाणी में हो और जो वाणी में है उसका क्रिया अनुसरण करे। मन, वाणी और क्रिया की समरसता में हमारा जगत में कुछ भी रहस्य नहीं होना चाहिये।

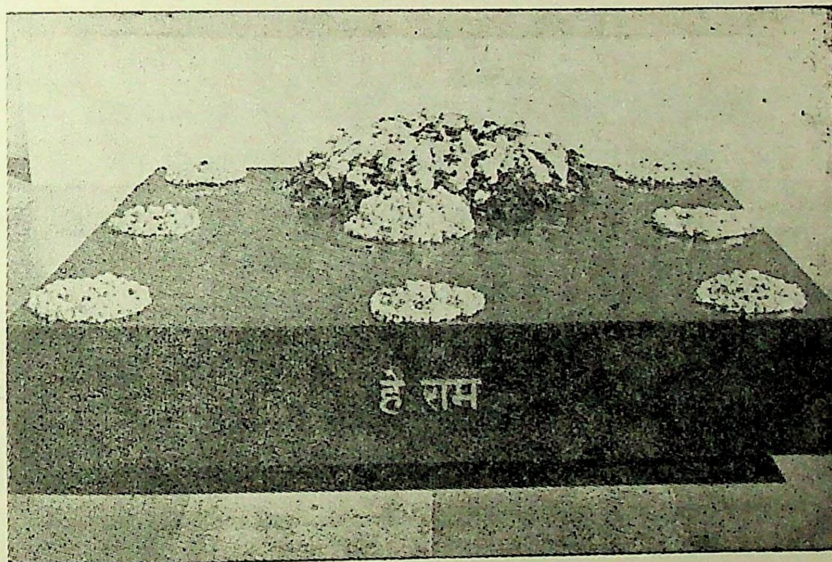
The fifth principle is of simplicity. Simplicity in thoughts, words and deeds. Whatever one says it should be followed by deeds. Whatever we preach and do it should be quite consistant and free from all sorts of mystries.

गौतम बुद्धस्य पंचशील वत्स्वकीयान् पंच सिद्धान्तान् प्रतिपालयन् महात्मा गांधीरपि स्व प्राणान् उत्ससर्ज ।

गौतम बुद्ध के पंचशील के समान अपने पांच सिद्धान्तों का पालन करते हुए महात्मा गांधी ने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

Like Gautam Budha's Panchsheel, living up to his five principles Mahatma Gandhi laid down his life.

गांधी



समाधि

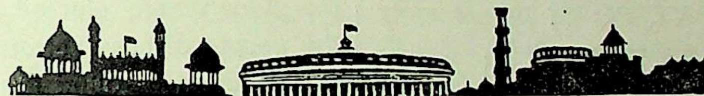


जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।। —गीता

जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और जिस की मृत्यु हुई है उसका जन्म निश्चित है इस लिये तू अपरिहार्य (अवश्यम्भावी) के लिये सोच करने योग्य नहीं है ।

For the born must die and for the dead, certain is birth ; on the inevitable, therefore Thou shouldst not be sad.





— भारतीय संसद् —

ततश्चेन्द्रप्रस्थेऽद्भुत-विरचनं शासनसभा,
गृहं कोष्ठैर्व्याप्तं विलसति महार्घासनयुतैः ।

प्रजानामपदान्तं प्रतिनिधिगणाः शासकगणैः,
समं यत्र स्थित्वा निज-निज विचारान् निदधते ।

भारतीय संसद—

इन्द्रप्रस्थ में १६२१ ई० में संसद भवन का निर्माण हुआ जो निर्माण कला का अद्भुत नमूना

The Indian Parliament—

The Parliament House was built in Indraprastha in the Year 1921 which is an

है। इस भवन में जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि शासकवर्ग के साथ बैठ कर वर्ष भर में अनेक विषयों पर अपने विचार प्रकट करते हैं।

exquisite specimen of architecture. This is the place where elected representatives of the people discuss various matters of national importance round the year sitting with the representatives of the Government.

भारतीय-संसद् भाग-द्वये विभक्तमस्ति— (१) लोकसभा (२) राज्यसभा च। लोक-सभायाः सदस्याः सम्पूर्ण भारतात् प्रत्यक्ष-निर्वाचनद्वारा निर्वाचिता भूत्वा आगच्छन्ति। राज्यसभायाः सदस्याश्च भारतस्य प्रान्तीय विधानसभानां सदस्यैः निर्वाच्यन्ते केचिच्च राष्ट्रपतिना मनोनीताः क्रियन्ते।

भारतीय संसद् दो भागों में विभक्त है— १. लोक सभा २. राज्य सभा।

लोक सभा के सदस्य सम्पूर्ण भारत से प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा चुन कर आते हैं। राज्य सभा

The Indian Parliament is a bicameral body— 1. Lok Sabha and 2. Rajya Sabha.

Members for the Lok Sabha are elected through direct election by the people from all over India and members for the

के सदस्य राज्यों की विधान सभाओं के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं तथा कुछ राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किये जाते हैं।

Rajya Sabha are elected through an indirect election by the members of various State Legislatures and some are nominated by the President of India.

इदानीं केन्द्रीय-लोकसभायाः ५२४ सदस्याः तथा राज्यसभायाः २४० सदस्याः सन्ति। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डले मन्त्रिणां संख्या ५३ वर्तते येषु १४ मन्त्रि-स्तरस्य, २२ राज्य-मन्त्रि स्तरस्य तथा १७ उपमन्त्रि स्तरस्य मन्त्रिणः सन्ति।

इस समय केन्द्रीय लोक सभा के ५२४ सदस्य हैं तथा राज्य सभा के सदस्य २४० हैं। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कुल मंत्रियों की संख्या ५३ है १४ जिनमें मंत्री स्तर के, २२ राज्य मंत्री स्तर के तथा १७ उपमंत्री स्तर के मंत्री हैं।

Presently there are 524 members of the Lok Sabha and 240 of the Rajya Sabha. The strength of the Union Ministry is fifty-three out of whch there are 14 Ministers of cabinet rank, 22 Ministers of State and 17 Deputy Ministers.

भारतं सम्प्रति २१ प्रान्तेषु एवं ६ केन्द्रशासित प्रदेशेषु विभक्तमस्ति । प्रान्तानां प्रमुखो राज्यपालः कथ्यते, केन्द्र-शासित-प्रदेशानाञ्च उपराज्यपालः । एते सर्वेऽपि जनता-निर्वाचित-प्रतिनिधीनां मन्त्रिमण्डलानाञ्च माध्यमेन निज-निज-प्रदेशानां कार्यं चालयन्ति । प्रदेश-मन्त्रिमण्डलस्य प्रमुखः मुख्य-मन्त्री, केन्द्रीय-मन्त्रिमण्डलस्य प्रमुखश्च प्रधान-मन्त्री उच्यते । दिल्ली अपि एकः केन्द्रशासित प्रदेशोऽस्ति । अस्य शासन-व्यवस्था महानगर-परिषदो माध्यमेन उपराज्यपालस्य निरीक्षकत्वे चलति । शासन-व्यवस्थायाः सञ्चालनं कार्य-कारिणी परिषद करोति । दिल्ली-प्रदेशे सम्प्रति श्री बालेश्वर प्रसाद महोदय उपराज्यपाल पदमधितिष्ठति कार्यकारि परिषदः प्रमुखश्च श्री राधारमण महोदयोऽस्ति । इदानीं भारतस्य प्रधान-मन्त्रिपदं श्रीमती इन्दिरा गान्धी समलंकरोति ।

भारत में इस समय २१ राज्य तथा ६ केन्द्र शासित प्रदेश हैं । राज्य का प्रमुख शासक

The country is divided into 21 States and 9 Union territories. Governor is the

राज्यपाल ग्रौर केन्द्रशासित प्रदेश का प्रमुख उपराज्यपाल। ये सभी जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की सभाग्रों ग्रौर मंत्रिमंडलों के माध्यम से ग्रपने-ग्रपने राज्यों ग्रौर प्रदेशों का शासन चलाते हैं। राज्यों के मंत्रिमंडलों के प्रमुख मुख्य मंत्री ग्रौर केन्द्रीय मंत्रिमंडल के प्रमुख को प्रधान मंत्री कहते हैं।

दिल्ली भी एक केन्द्र शासित प्रदेश है। इसकी शासन व्यवस्था महानगर परिषद् के माध्यम से उपराज्यपाल के निरीक्षण में चलती है। शासन व्यवस्था का संचालन कार्यकारिणी परिषद् करती है। दिल्ली प्रदेश में इस समय श्री बालेश्वर प्रसाद उप राज्यपाल हैं। कार्यकारी परिषद् के प्रमुख श्री राधारमण हैं तथा भारत के प्रधानमंत्री पद को श्रीमती इन्दिरा गांधी शोभित करती हैं।

head of a State and Lt. Governor is the head of a Union territory.

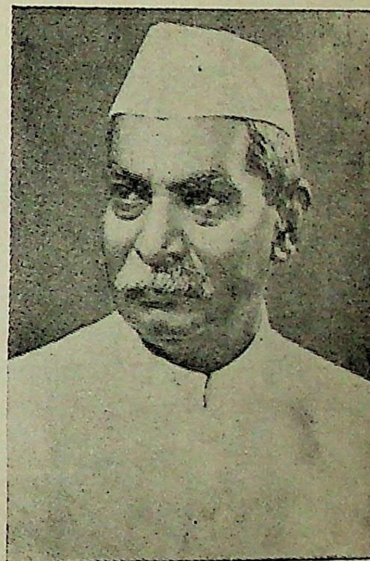
The Governors and Lt. Governors run the administration with the help of legislatures consisting of their cabinets and the peoples' representatives. In the States the cabinet is headed by a cheif minister and at the centre by the Prime Minister.

Delhi also is one of the Union territories. The Lt. Governor, with the help of Metropolitan Council and the Executive Council runs the administration. In the Union territory of Delhi, at present, Shri Baleshwar Prasad is the Lt. Governor and Shri Radha Raman is the Chief Executive Councillor. The Prime Minister of India is Shrimati Indira Gandhi.



— सत्यमेव जयते —

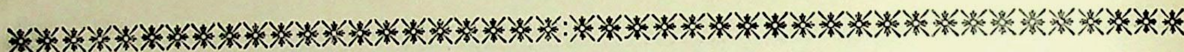




लोकानां निश्छल सेवकः,
राष्ट्रीय भावनया समुच्छलित पुनीतहृत्कः,
आर्जवेन हृदयस्य सकल जन मनोविजेता;
'भारत रत्न' महा जन नेता,
भारतीय संविधान विधाता;
आचारे व्यवहारे आर्य-संस्कृतेः महास्थपति,
राजेन्द्रप्रसादो नः प्रथमो राष्ट्रपतिः।

महात्म गान्धिनः पट्टशिष्य हे !
सत्यव्रत सतत दृढ-निष्ठ हे !
स्वातन्त्र्य-महायज्ञे हुतसर्वस्व,
स्वःस्थः श्रद्धाञ्जलिमद्य नः स्वीकुरुष्व !





जनता के निष्कपट सेवक, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत, पवित्र हृदय, सरल स्वभाव से सबका मन जीतने वाले, 'भारत रत्न', महान् जन-नेता, भारतीय संविधान के निर्माता, आचार और कर्म में आर्य संस्कृति के उन्नायक डा० राजेन्द्र प्रसाद हमारे प्रथम राष्ट्रपति हुए।

हे महात्मा गांधी के पट्टशिष्य, सत्यव्रत पर सदा दृढ़ रहने वाले, स्वतन्त्रता की बलि-वेदी पर सर्वस्व अर्पण करने वाले, आप हमारी श्रद्धांजलि स्वीकार करें।

A sincere servant of the people, brimming with a deep sense of nationalism; a pious soul, who won the hearts of all by his amiable temperament; a gem of India (the 'Bharat Ratna'); an architect of the Indian Constitution and an embodiment of Aryan culture by conduct and actions; Dr. Rajendra Prasad was the first President of the Indian Republic.

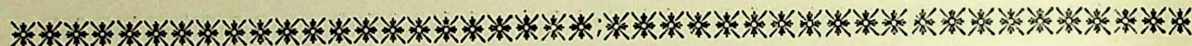
Our humblest salutations to thee—the disciple of Mahatma Gandhi, the firm believer of truth, the noble soul who sacrificed everything on the altar of independence.





दर्शनशास्त्र महाविज्ञाता,
अध्यात्म-ज्योतिषा कलुषित भौतिकवाद-तिमिर हर्त्ता,
राजनीति-नैपुण्या राष्ट्र-समस्या-सतत चिन्तने,
उत्पीडित प्रजा दुःख निर्हरणे,
सदाऽवहित चिन्तोऽस्माकं विद्यापतिः,
'भारत रत्न'—राधाकृष्णन् द्वितीयो राष्ट्रपतिः,

वृद्धस्त्वम् सेवा निवृत्तोऽसि,
भारतीय ज्ञान ज्योतिस्तथापि दीपयसि,
मिथ्याज्ञाने निरुत्तरीकृत प्रत्यनीक !
शतं जीव, हे ऐकात्म्येबद्ध विश्वजीव !



दर्शन शास्त्र के वृहस्पति; अध्यात्म ज्योति से कलुषित भौतिकवाद के अन्धकार को नष्ट करने वाले, राजनीति में निष्णात, राष्ट्र की चिंता में सदा रहने वाले, दु:खी जनों के दु:ख को दूर करने वाले, हे महान् विद्यानिधि हमारे चित्त में सदा बसे रहो। "हे भारत रत्न", राधाकृष्णन्, आप द्वितीय राष्ट्रपति रहे।

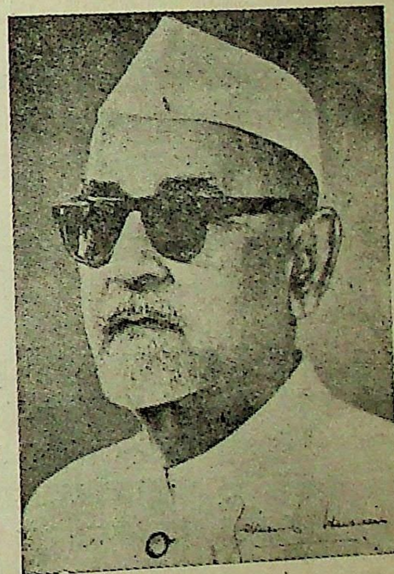
यद्यपि आप अब पदनिवृत्त हैं तथापि भारत की ज्ञानज्योति को प्रकाशित कर रहे हैं! मिथ्या ज्ञान वाले विरोधियों को निरुत्तर करके एकात्मा में बद्ध, हे विश्वजीव आप सौ वर्ष जीवें!

The Virhaspati in the field of philosophy;
The great dispeller of darkness of materialism by spiritual enlightenment;
The sagacious political thinker, always engrossed in solving national problems;
The great educational luminary ever present in our hearts;
'O' Bharat Ratna' Radha Krishnan! you adorned the highest office of the land as its second President.

Now you lead a retired life. Still your erudition silences the din of false knowledge. May you live for hundred years.

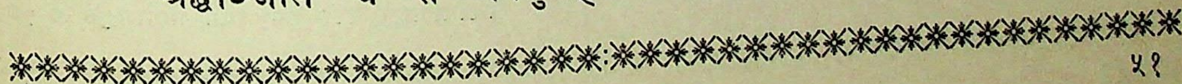






राष्ट्र-शिक्षाया उन्नायकः
धर्म-निरपेक्षतया देश-एकता सन्देश वाहकः ।
विद्वत्प्रकाण्डतया सकल जन मन आकर्षकः,
नवयुवकेषु नवचेतना फूत्कारकः,
शासन दक्षतया निष्पक्ष भाव कृत न्यायानुगतिः,
जाकिरहुसेनो नस्तृतीयो राष्ट्रपतिः ।

अधिकार पदस्थ एव हा । त्वं नो विरहय्य गतः,
किन्तु भावनामय देहेऽद्यापि त्वं नो मध्यगतः,
स्वातन्त्र्य जयन्त्यां त्वामिह वयं नमामः,
श्रद्धाञ्जलिं च ते वयमुपाहरामः ?



राष्ट्र की शिक्षा का उत्थान करने वाले, धर्म निरपेक्षता से देश में एकता का संदेश फैलाने वाले, अपनी प्रकांड विद्वत्ता से सम्पूर्ण जनता के मन को आकर्षित करने वाले, नवयुवकों में नवचेतना का संचार करने वाले, शासन की दक्षता के कारण निष्पक्ष भाव से न्याय का अनुसरण करने वाले डा० ज़ाकिर हुसैन हमारे तीसरे राष्ट्रपति हुए ।

आप राष्ट्रपति पद पर रहते हुए हमें छोड़ कर चले गए, परन्तु भावनामय शरीर से आज भी आप हमारे बीच विद्यमान हैं । अपनी स्वाधीनता की रजत जयन्ती के दिन हम आपको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं !

The builder of the edifice of national education;

The great messenger of national unity through secularism;

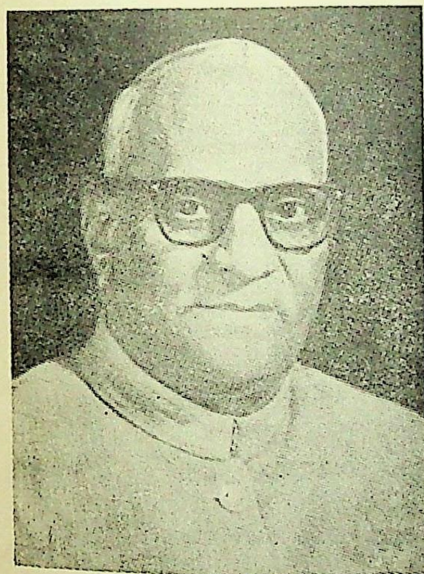
The great scholar who fascinated all by his learning;

And inspired the youth with invigorating traditions;

A capital administrator renowned for his impartiality;

Dr. Zakir Husain was our third President.

You left us while still you were the President, Non the less you occupy a distinct place in our hearts;
On this day of Silver Jubilee of our independence We pay our homage to you.



समाजवाद महाव्याख्याता,
श्रमिक वर्ग वेदनया द्रुत-हृदयस्तेषामतिहितकर्ता,
निज घोर प्रचुर प्रचारैः देशे सामाजिक न्यायमाहर्ता,
वृद्धोऽपि तरुणमना, देहे प्रत्यक्षगिरिः,
चतुर्थराष्ट्रपतिरद्य श्रीवराह-वेंकट-गिरिः ।

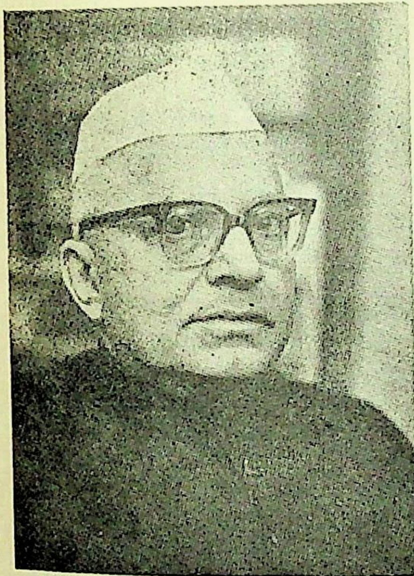
हे राष्ट्रनौ कर्णधार !
नीतिज्ञताया महागार !
सविवेकं चतुरं चालय नौका दण्डमः
शत्रु दुरभिसन्धिं खलु कुरु खण्डं खण्डम्,
दारिद्रय-पिशाचो देशात् त्वरितं गच्छतु,
सत्य समाजवाद इह द्रुतमागच्छतु ।

समाजवाद की व्याख्या करने वाले, श्रमिक वर्ग की वेदना से द्रवित होकर उनका हित करने वाले, अपने उदात्त विचारों से देश में समाजवाद का प्रसार करने वाले, वृद्ध होते हुए भी युवक समान हृदय रखने वाले, गिरि समान सुदृढ़ श्री वराह वेंकटगिरि हमारे चतुर्थ राष्ट्रपति हैं।

हे राष्ट्र नौका के कर्णधार ! महान् राजनीतिज्ञ ! अपने विवेक चातुर्य से इस नौका को चलाइए; शत्रु की कूट योजनाओं को खण्ड-खण्ड कीजिए, जिससे दरिद्रता का पिशाच इस देश से शीघ्र भगाया जा सके और सच्चा समाजवाद यहाँ शीघ्र आये।

The great exponent of socialism;
The great benefactor of the working classes;
The great pioneer of socialism in the country;
Though old in age, yet young in spirit;
Stalwart and firm like a mountain;
Shri Varah Venkat Giri adorns the peak position of the President fourth.

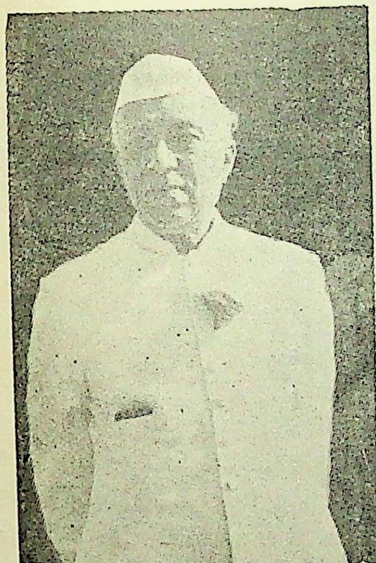
Oh great leader of the nation.
You are renowned for your radical ideas in the field of politics.
You lead this nation with dexterity outwitting the designs of enemies to destroy the demon of poverty soon and real democracy may come soon.



भारतस्य स्वतन्त्रता-सेनानी, प्रख्यातो विधिवेत्ता, न्याय-शास्त्री च श्री गोपाल स्वरूप पाठकमहोदयः कर्त्तव्यनिष्ठायाः सूक्ष्म-विवेकस्य समर्पण-भावनायाश्च गुणानां कारणात् भारतस्य उपराष्ट्रपति-पदमलंकुर्वाणो वर्तते। केन्द्रीय मन्त्रि तथा राज्यपालस्य पदे कार्यंकृत्वा श्रीमता कुशल-प्रशासकस्य चादर्श समुपस्थापितः। अनेकेषु विश्वविद्यालयेषु कुलपति पदमलंकृत्य शिक्षा क्षेत्रेऽपि भवन्तः सफल नेतृत्व-प्रदानं कुर्वन्ति।

भारत के स्वतन्त्रता सेनानी, प्रख्यात विधिवेत्ता और न्यायशास्त्री श्री गोपालस्वरूप पाठक कर्त्तव्य निष्ठा, सूझबूझ और समर्पण भाव जैसे गुणों के कारण भारत के उपराष्ट्रपति पद को सुशोभित कर रहे हैं। केन्द्रीय मंत्री और राज्यपाल के पदों पर रह कर आपने कुशल प्रशासक होने का आदर्श प्रस्तुत किया है। अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपति पदों को सुशोभित कर शिक्षा के क्षेत्र में भी आप नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

Freedom fighter of the first rank, eminent jurist and reputed lawyer Shri Gopal Swaroop Pathak adorns the office of the Vice President of the Republic—an office he aquired by his devotion to duty, foresightedness and dedication. He presented the ideal of an efficient administrator while occupying the offices of the Union Minister and Governor. Besides, he has given a lead in the educational sphere by being Chancellor of various universities.



प्रथमो प्रधान मन्त्री : पं० जवाहर लाल नेहरू

प्रथम प्रधान मन्त्री : पं० जवाहर लाल नेहरू

First Prime Minister : Pt. Jawahar Lal Nehru

महात्मना हि बुद्धेन प्राणिनां हितकाम्यया
सिद्धान्तः पञ्चशीलस्य धर्म-क्षेत्रे प्रवर्तितः ।

प्राणियों की भलाई की इच्छा से महात्मा बुद्ध ने धर्म-क्षेत्र में पञ्चशील का सिद्धान्त चलाया था ।

Mahatma Budha initiated the Panchsheel for the welfare of people in the religious field.

जवाहर महाभागो देशानां हितकाम्यया
राजनीतिक क्षेत्रेऽपि पञ्चशीलमयोजयत् ।

पं० जवाहर लाल ने देशों की भलाई की चाह से पञ्चशील को राजनीति के क्षेत्र में संजोया ।

Pandit Jawahar Lal Nehru initiated the Panch Sheel—the five Principles—in the world politics with a view to establishing harmonious relation between various countries of the world.

नेहरोः पञ्चशीलस्य संक्षेपो दीयते मया,
शीलयेत् राष्ट्रसंघश्चेत् लोके शान्तिर्भविष्यति ।

मैं नेहरू के पञ्चशील का संक्षेप देता हूं। यदि राष्ट्र-संघ इसे अपना ले तो विश्व में शान्ति हो जायगी ।

These principles, if adopted by the United Nations, would help in establishing permanent peace in the world. Here I reproduce those principles in short as under;



प्रथमं शीलम्—

कोऽप्यस्मिन् विश्वे विश्वस्मिन् प्रबलो बलहीनो वा देशः,
प्रभुसत्ता सम्पन्नः सोऽन्यैरादर दृष्टया निरीक्षितव्यः ।

१. दूसरा देश चाहे कमज़ोर हो या बलवान, वह प्रभुसत्ता-सम्पन्न है, उसे आदर की दृष्टि से देखो ।

1, Due regard for the sovereignity of other countries : A country may be politically weak or srtong, but its soverəignity must be honoured.

द्वितीयं शीलम्—

सैनिक-बल-दृप्तो वा धन-मत्तो वा देशः कोऽपि,
दासीकर्तुञ्चान्यं देशं कुर्यान्नैव कदाप्याक्रमणम् ।

२. सैनिक शक्ति से गर्वित अथवा धन से मत्त हुआ कोई भी देश दूसरे देश को गुलाम बनाने के लिए कभी उस पर आक्रमण न करे ।

2, Any country inspite of its being intoxicated with strong military power and economic prosperity should not attack a weaker country in order to make it slave.





तृतीयं शीलम्—

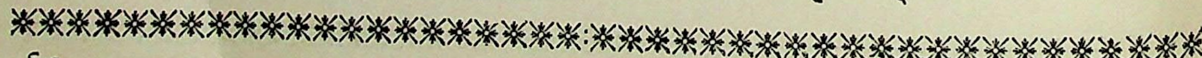
को देशः को धर्मः कस्तद् राजनीतिसिद्धान्तः,
इत्यान्तरिके विषये हस्तक्षेपं न कदापिखलुकुरुत ।

३. देश कौन है, उसका धर्म क्या है, उसका राजनीतिक सिद्धान्त क्या है इस तरह के दूसरे देश के भीतरी मामलों में कभी हस्तक्षेप न किया जाय ।

3, Non-interference into any other country's internal affairs on the basis of its faiths, political ideology and policies.

चतुर्थं शीलम्—

श्वेताः कृष्णाः पीताः सर्वेऽपि जगति मनुजा एव,
आदर-दृष्ट्या दृष्ट्वा सर्वेषु धरत भ्रातृभावम् ।



४. चाहे सफेद हों, काले हों या पीले हों — हैं तो सभी मनुष्य ही। आदर की दृष्टि से देख कर सबके प्रति हमेशा भ्रातृ-भाव रखो।

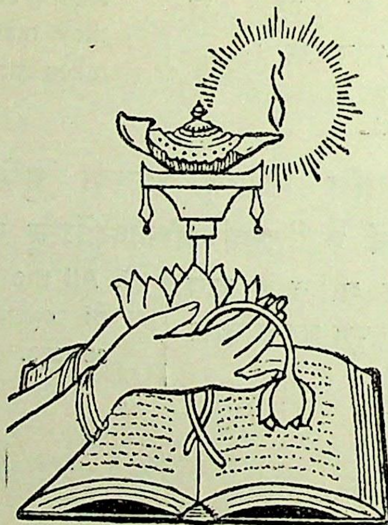
4. There should be complete fraternity among all peoples of the world though they may belong to different colours, races and religions.

पञ्चमं शीलम्—

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु शान्त्या सुखेन जीवन्तु,
सहास्तित्वं शान्तिरूपं लोकादर्शोऽस्तु लोकेऽस्मिन्।

५. सभी का कल्याण हो, सब शान्ति के साथ सुख से जीयें, संसार में शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व लोगों का आदर्श बने।

5. All the nations should follow the path of co-existence, live in peaceful atmosphere.





बाल्यादेव पितुः प्रगाढ-मधुर स्नेहेन या लालिता।
पुत्रत्वेन पितुः सुकीर्ति-निचयां लोकश्च यां मन्यते॥
नित्यं राजनये पितुश्चरणयोर्याताच या दीक्षिता।
दीपाद्दीपशिखेव विश्वविदिता सैवेन्दिरा राजते॥

बाल्यावस्था से ही पिता के प्रगाढ़ और मधुर स्नेह से लालित अच्छे यश समूह से युक्त जिसको संसार पुत्र रूप से मानता है। दीपक से प्रकाश लेने वाले दीपक के समान जिसने पिता के चरणों में बैठकर नित्य राजनीति की शिक्षा ली है। विश्व-विदित वही इन्दिरा गांधी शोभित हो रही है।

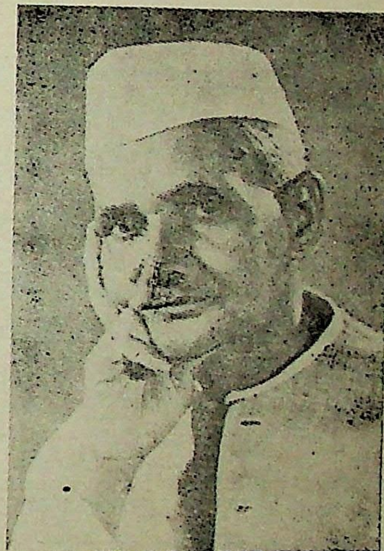
Glory of Smt. Indira Gandhi, blessed with deep affection of her dear father since her childhood, whom the world respects like his glorious son who got inspiration and education of daily politics at the feet of her father as lamp lights lamp, is spreading light here, there and everywhere.



द्वितीयो प्रधान मन्त्री : श्री लालबहादुर शास्त्री

द्वितीय प्रधान मन्त्री : श्री लालबहादुर शास्त्री

Second Prime Minister : Shri Lalbahadur Shastri



श्री—लेन नृणां हृदयानि जित्वा
ला—लित्य वाण्या ऽतुल-कौशलेन
ल—ब्धं यशो भारत-भूमि-भागे
ब—हादुरोऽसौ कृतिभिः कुलीनः
हा—स्येन वाचा प्रणयेन युक्त्या
दु—ष्टा जना येन कृताः कृतज्ञाः
र—क्षा-विधानैः कृत-देश-रक्षः

शा—स्त्री चिरं राष्ट्र-हिते जिजीव ।
स्त्री—णां च पुंसामिव गौरवं वै
प्र—वर्ध्य तासामुदयं दिशन्नसौ
धा—म्ना प्रतीपान् प्रणतान्प्रकुर्वन्
न—तादृशः कोऽपि बभूव शास्ता
म—ध्यस्थतायां स्व मतं प्रयच्छ-
न्त्री—नैव पक्षान् शमितानकार्षीत्
ध—र्मध्वना सत्य पथे च गच्छ
न्यः—कीर्तिमान् शान्ति-बलिर्बभूव ।

श्रीमान् ने लोगों के हृदय जीत कर अपनी ललित वाणी और अतुलनीय कौशल से भारत

He, who won the hearts of the people on Indian soil and earned glory for himself

भूमि पर जिसने बड़ा यश प्राप्त किया वह अपने कार्यों से कुलीन लालबहादुर शास्त्री हैं। हास्य से, वाणी से, तर्क से उसने दुष्ट लोगों को भी अपना कृतज्ञ बना लिया। रक्षा करते हुए शास्त्री देश के लिए जिए। पुरुषों की तरह स्त्रियों को बढ़ा कर उनको उन्नति का मार्ग दिखाते हुए शास्त्री अपने प्रभाव से अपने विपक्षियों को भी झुकाने वाले शास्त्री जैसा शायद कोई नहीं हुआ। विवादों में मध्यस्थ बनकर अपना मत देते हुए वे तीनों पक्षों को शान्त कर दिया करते थे। धर्म और सत्य के पथ पर चलते हुए। शास्त्री जी शान्ति के लिए बलि हो गये।

by his charming voice and matchless skill and who acquired greatness by his actions, was Lal Bahgdur Shastri. His humour, his persuasive voice and his logic transformed even the wicked so that they felt grateful to him. While protecting the country Shastri lived like a man. He encouraged even the women to the path of progress. He was unparalleled to humble down his opponents by his own influence. His opinion on disputed issues satisfied all the parties. Shastriji became a martyr for peace on the path of Dharma and truth.



— जय जवान, जय किसान —

तृतीयो प्रधान मन्त्री : श्रीमती इन्दिरा गांधी

तृतीय प्रधान मन्त्री : श्रीमती इन्दिरा गांधी

Third Prime Minister : Shrimati Indira Gandhi



दिल्यां भारतस्य तृतीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी साम्प्रतम् राजते । या कूटनीत्यां, व्यवहारे, संस्कृतौ, वेषभूषादिषु च स्व पितृ चरणेभ्यः श्री जवाहरलाल नेहरू महोदयेभ्योऽपि अग्रगामिनी अस्ति । अस्या राजनीति व्यवहार कौशलं च देशीयाः वैदेशीया अपि जनाः मुक्त कण्ठेन प्रशंसन्ति । भारतीय निधिरक्षकाणां (बैंकानां)



राष्ट्रीय करणेन भारतीय शासकानां नृपतीनां विशेषाधिकारापहरणेन, भूमे सीमा नियोजनेन च समाजवादं भारते आनेतुं प्रयत्नशीला सतंत वर्ततेऽसौ ।

इस समय दिल्ली में भारत की तीसरी प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी शोभित हैं, जो कूटनीति में, व्यवहार में, संस्कृति में तथा वेष-भूषा आदि में अपने पिता श्री जवाहरलाल नेहरू से भी आगे हैं। इनकी राजनीति तथा व्यवहार कौशल की देश और विदेश सभी जगह मुक्त कंठ से प्रशंसा की जा रही है। बैंकों के राष्ट्रीयकरण द्वारा, भारतीय राजाओं के प्रिवीपर्स तथा विशेषाधिकारों को समाप्त करने एवं भूमि तथा शहरी सम्पत्ति की सीमा निश्चित करने आदि प्रक्रियाओं द्वारा ये भारत में समाजवाद लाने में प्रयत्नशील हैं।

At present Shrimati Indira Gandhi is India's third prime minister, who in matters like diplomacy, way of dealing and culture etc. is superceeding her father Shri Jawahar Lal Nehru. Her political ability and successful handling of so many difficult situations is appreciated and praised in India as well as abroad. By nationalising banks, stopping privi-purses of ex-princes and fixing sealings on rural and urban property she is honestly trying to bring real socialism in India.



श्रीमत्या इन्दिरागांधीमहाभागाया जन्म १९ नवम्बर १९१७ दिनांकेऽभूत। तज्जन्मसमये श्रीमती सरोजिनी नायडूतारपत्रेणासूसुचत्—'सा भारतस्य नूतन आत्मास्ति' इति। प्रियदर्शिन्याइन्दिरायाः प्रारम्भिकी शिक्षा स्विट्जरलैण्डनाम्नि देशे निरपद्यत। पश्चात्सा शान्तिनिकेतनमयासीत्, तत्रापि च कञ्चित्कालं शिक्षामवापत्। शान्तिनिकेतनात् प्रियदर्शिन्या इन्दिरायाः समावर्तनसमये गुरुदेवः श्रीरवीन्द्रनाथठाकुरः श्री नेहरूं प्रति पत्रमलिखत्—

श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म १९ नवम्बर १९१७ को हुआ। इनके जन्म के अवसर पर श्रीमती सरोजिनी नायडू ने तार से सूचना दी थी कि—'वह भारत की नूतन आत्मा है।' प्रिय-दर्शिनी इन्दिरा की प्रारम्भिक शिक्षा स्विटज़रलैण्ड में सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् वे

Shrimati Indira Gandhi was born on the 19th November, 1917. Congratulating on her birth Smt. Sarojini Nayudu had said, "She is the new soul of India." Priyadarshini Indira received her early education at Switzerland. After that she joined the Shanti Niketan for further studies. When priyadar-

शान्ति निकेतन में आ गईं तथा कुछ समय तक वहां शिक्षा प्राप्त करती रहीं। शान्ति निकेतन से प्रिय दर्शिनी इन्दिरा के समावर्तन के समय श्री गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने श्री नेहरू को पत्र लिखा था :—

shini Indira was leaving Shantiniketan Gurudev Rabindra Nath Tagore wrote to Shri Jawahar Lal Nehru thus :

"अहं खिन्नेन मनसा इन्दिरां प्रतियापयामि, साऽस्य स्थानस्य श्रीरभूत्। येन विधिना भवता सा ललिता-पालिता, तस्य प्रशंसनं विना स्थातुं न शक्यते।"

"मैं खिन्न मन से इन्दिरा को भेज रहा हूं। यह इस स्थान की शोभा अथवा लक्ष्मी थी। जिस प्रकार से आपने उसका लालन और पालन किया है, उसकी प्रशंसा किये बिना रहा नहीं जा सकता।'

"I am sending Indira with heavy heart. She was the grace of this place. I must appreciate the way you have brought her up."



शान्तिनिकेतनादनन्तरं सा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालस्य समरविले कालेजे प्रविष्टा, तत्र च तया शिक्षाऽधिगता। तत्र तया ब्रिटिशश्रमजीविदलस्यान्दोलने संविभागः प्राप्तः, अस्य हि दलस्य भारतीयस्वाधीनतान्दोलनेन सहानुभूतिरभूत्।

शान्ति निकेतन के बाद इन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के समरविले कालेज में प्रवेश लिया और शिक्षा प्राप्त की। वहां इन्होंने ब्रिटेन की मजदूर पार्टी के आन्दोलन में भाग लिया, इस दल की भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ सहानुभूति थी।

After leaving Shantinketan she joined the Summerville college of the Oxford University. There she participated in the activities of the British Labour party which had sympathetic attitude towards the Indian freedom movement.

१९३८ ख्रिष्टाब्दे यदा तस्या आयुः केवलमेकविंशतिवर्षात्मकमासीत्। इन्दिरा महाभागा कांग्रेसे सम्मिलिताऽभवत्। १९४२ ख्रिष्टाब्दे प्रियदर्शिन्या इन्दिराया विवाहः



श्रीफिरोजगान्धिनासह सम्पन्नः, तदनन्तरं कतिपयैरेव दिनैर्नवदम्पती स्वाधीनतान्दोलने कारागारे प्रविष्टौ । ताभ्यां त्रयोदश मासाः प्रयागस्य नैनी केन्द्रीय कारागारे व्यतियापिताः । कारागारान्मुक्ता सा समाजसेवाकार्येषु परमेणोत्साहेन संलग्ना ।

सन् १९३८ में जबकि इनकी आयु केवल २१ वर्ष थी ये कांग्रेस में सम्मिलित हो गईं । सन् १९४२ ई० में प्रियदर्शिनी इन्दिरा का श्री फिरोज गांधी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ । इसके कुछ समय बाद ही ये नव-दम्पति स्वाधीनता के आन्दोलन में जेल चले गए । कारागार से मुक्त होकर वे दोनों समाज-सेवा में संलग्न हो गये ।

In 1938 when she was only 21 she joined the Congress. She was married to Shri Feroz Gandhi in 1942. It was not long after the marriage that the couple had to go to jail for taking part in the freedom struggle. After they were released from the jail, they engaged themselves in the task of social service.

यदा १९४६ खिष्टाब्दे तस्याः पिता श्रीजवाहरलालनेहरूर्वायसरायस्य परिषदि उपाध्यक्षपदे प्रतिष्ठितः, तदा स दिल्लीमागतः । तेष्वेव दिनेषु श्रीमती इंदिरागान्धी

महाभागापि दिल्लीमागता, ततश्च सा मन्ये दिल्लीनिवासिन्येव संवृत्ता। १९५५ ख्रिष्टाब्दे सा कांग्रेसकार्यसमितौ सममेल्यत, वर्षचतुष्टयानन्तरञ्च सा कांग्रेसाध्यक्षपदमधिष्ठिता।

सन् १९४६ में इनके पिता श्री जवाहरलाल नेहरू जब वायसराय की परिषद् के उपाध्यक्ष नियुक्त हुए तब वे दिल्ली आए। उन्हीं दिनों श्रीमती इन्दिरा गांधी भी दिल्ली आईं। तब से दिल्ली निवासिनी ही हो गई हैं। सन् १९५५ ई० में वह कांग्रेस कार्यकारिणी में सम्मिलित की गईं। इस के चार वर्ष बाद वे कांग्रेस अध्यक्षा बनीं।

In 1946 when her father Pt. Jawahar Lal Nehru became the Deputy Chairman of the Viceroy's Executive Council, she also came over to Delhi and since then she has become a permanent resident of Delhi. In 1955 she was included in the working committee of the Congress. After only four years, she was elected President of the Congress.

युवकानां युवतीनां च कृते श्रीमती इन्दिरागान्धी महोदया सदैव प्रेरणास्रोतस्तयाऽतिष्ठत्। यदा च सा कांग्रेसाध्यक्षतां गता, तदा सा अशेषस्यापि देशस्य भ्रमणम-

कार्षीत्। विशेषतश्च तया युवकवर्गे नूतनोत्साहो नूतना चेतना च प्रपूरिता। श्रीमती इंदिरागांधी महोदया राष्ट्रस्य संकटमये समये कदापि तूष्णीं न स्थिता, सदैव चाग्रेसरीभूय सा समस्याः समाधातुमात्मानमयुजत्। देशस्य विभाजनावसरे पाकिस्तानादागच्छतां शरणार्थिनामाश्रयप्रदाने तया कथं व्यवसितमिति न कस्यचनाप्यविदितम्।

युवक तथा युवतियों के लिये श्रीमती इन्दिरा गांधी सदा ही प्रेरणा का स्रोत रही हैं। कांग्रेस की अध्यक्षा होने पर इन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और विशेष रूप से युवक वर्ग में नया उत्साह और नई चेतना फूंकी। श्रीमती इन्दिरा गांधी राष्ट्र के संकट के समय कभी चुप होकर नहीं बैठीं और आगे बढ़कर संकट के समाधान में लग गईं। देश के विभाजन के समय पाकिस्तान से आए हुए शरणा-

Shrimati Indira Gandhi has always been a source of inspiration to the youth of the country. After being elected as the President of the Indian National Congress she toured the whole country and infused the young generation of the nation with a new vigour and zeal. Whenever the country was faced with a crisis, Shrimati Indira Gandhi could never remain a silent spectator



र्थियों को आश्रय देने के कार्य में उन्होंने जितना परिश्रम किया वह किसी से अविदित नहीं है।

and came forward to resolve the crisis. At the time of partition she did a herculean job for the rehabilitation of refugees which is well known.

१९६२ ख्रिष्टाब्दे यदा चीनेन भारतमाक्रान्तम् तदा तत्कालिकेन वित्तमन्त्रिणा श्री मोरारजीदेसाई इत्यनेन कृतायामर्थयाच्ञायां सुवर्णदायिनी सा प्रथमा भारतीया महिलाऽऽसीत्। तयास्वकीयानि सर्वाणि सुवर्णाभरणानि राष्ट्राय समर्पितानि। एतान्याभूषणानि शतत्रयग्राममात्राण्यासन्। एषु च कैश्चन साकं तस्या मधुराः स्मृतयोऽपि युक्ता अभूवन्। न किलैतावदेव, तस्मिन् समये तया केन्द्रीयनागरिक परिषदध्यक्षाया अपि कार्यभारो गृहीतोऽभूत्। आक्रान्तुश्चीनस्य सैन्यानि भारतभूमेर्बहिष्कर्तुं जनसहयोगं व्यवस्थापयितुं यूनः सैनिकांश्च सर्वविधाः सामग्रीः सुविधाश्च प्रापयितुं समग्रैर्दलैः सहयोगेनोक्तायाः परिषदः संघटनं तया विहितम्। तया कियती महत्युत्तरदायिता गृहीता, कियतश्चाधिकः



श्रमस्तया सोढ इत्युनुमातुं सहसा न शक्यते। गतेषु दिनेषु पाकाक्रमणसमये तथा राष्ट्र-सेवायां रात्रिन्दिनं परिश्रान्तम्, सा सैनिकानुत्साहयितुं जनतां च सात्त्वयितुमग्रिमाण्ययनानि यावदगच्छत्।

सन् १९६२ ई० में जब चीन का भारत पर आक्रमण हुआ तब तत्कालीन वित्तमंत्री श्री मुरार जी देसाई की सुवर्णदान की अपील पर सुवर्ण दान देने वाली यह सब से पहली महिला थीं। उन्होंने अपने सारे स्वर्णभूषण राष्ट्र को समर्पित कर दिये। ये स्वर्णभूषण भार में ३०० ग्राम थे। इनमें से कुछ आभूषणों के साथ इनकी मधुर स्मृतियाँ भी सन्निहित थीं। इतना ही नहीं उस समय इन्होंने केन्द्रीय नागरिक परिषद की अध्यक्षा का पद भी ग्रहण किया आक्रान्ता चीन की सेना को भारत भूमि से बाहर करने के लिये जन-सहयोग की व्यवस्था करने

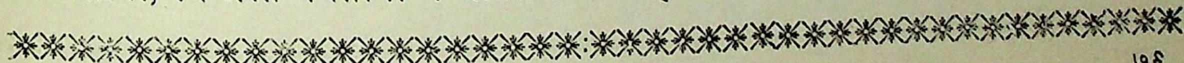
When China invaded this country in 1962 and the then Finance Minister Shri Morarji Desai made an appeal to donate gold and ornaments for the National Defence Fund, Shrimati Indira Gandhi was the first Indian to respond to the appeal. She donated all her jewellery to the nation which weighed 300 gms. Some of the jewellery pieces were connected with her past sweet memories. She also accepted the chairmanship of the Central Citizens, Council at that time. She deftly organised the Citizens' Council and



तथा युवकों और सैनिकों को सब प्रकार की सामग्री और सुविधा दिलाने में सब दलों के सहयोग से उक्त परिषद् का इन्होंने सुचारु रूप से संघटन किया। इन्होंने कितना महान उत्तर दायित्व ग्रहण किया, कितना अधिक श्रम किया इसका सहसा अनुमान नहीं किया जा सकता। विगत दिनों में पाकिस्तान के आक्रमण के समय राष्ट्र की सेवा में अपने आपको लगा दिया। सैनिकों को उत्साहित करने के लिये और जनता को सांत्वना देने के लिये सेना के अग्रिम मोर्चों तक का दौरा किया।

enlisted the cooperation of all the parties to provide necessary facilities and material to rhe Jawans who were fighting to drive out the Chinese aggressors from the Indian soil. At this occassion she gladly shouldered heavy responsibilities and put in unrelenting efforts to see the nation united and strong. During the Pakistani aggression she proved herself a worthy leader of a great country. She visited forward areas of strategic importance to encourage our valiant soldiers and bocst the morale of the local inhabitants.

श्रीमत्या इंदिरागांधीमहाभागायाः शक्तिस्तस्या दुर्बले निर्बले वा कलेवरे निहिता नास्ति, प्रत्युत तदीया शक्तिस्ते कोटि कोटयो देश वासिनः सन्ति, येषामेकतायां, क्षमतायां, स्वस्प्रति ममतायां च श्रीमती गांधीमहोदया विश्वसिति। कांग्रेसदलस्य नेत्रीत्वेन



वृतया तया प्रथमे पत्रकारसम्मेलने तावदिदमेवाभिहितमासीत्—'भारतमस्मिन् समये जटिलायां स्थितौ वर्तते, आर्थिकेषु, खाद्यसम्बन्धिषु, सीमवर्तिषुच्चायनेषु अस्मत्समक्षं भूयस्यो विषमाः समस्याः सन्ति। भारतीयया जनतया युगानुयुगैरकथनीयाः कठिनताः सोढाः सन्ति। वयं प्रतिसकटं संघटनेन दृढनिश्चयेन, आन्तरिकया शक्त्या च साकमुत्थिताः स्मः येनास्माकमस्तित्वमखण्डितमस्ति। अहमाशासे यथाऽऽन्तरिकी शक्तिरेकता च वर्धिष्येते। भारतीयजनतायाः शक्तावहं विश्वसिमि। अद्य प्रधानमन्त्रिणी साऽस्माकं नूतनानाम् आशानाम् महानाश्रयोऽस्ति।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की शक्ति उनके दुर्बल कलेवर में निहित नहीं है प्रत्युत उनकी शक्ति तो कोटि-कोटि देशवासी हैं। उनकी एकता, क्षमता तथा अपने प्रति ममता में श्रीमती गांधी का विश्वास है। कांग्रेस दल की नेत्री के रूप में अपने

The strength of Shrimati Indira Gandhi does not lie in her frail physical structure but it lies in millions of her countrymen who have complete faith in her. Their unity, solidarity, competence and affection is the source of real confidence to

प्रथम पत्रकार सम्मेलन में उन्होंने यही कहा था—

"भारत इस समय जटिल स्थिति में है, आर्थिक, खाद्य सम्बन्धी, सीमा के मोर्चों आदि की अनेक विषम समस्यायें हैं। भारतीय जनता ने युग-युगों से अनेक अकथनीय विषम कठिनाइयाँ सही हैं। हम प्रत्येक संकट के समय संगठित होकर दृढ़-निश्चय और आन्तरिक शक्ति से एक साथ उठ खड़े हुए हैं जिस से हमारा अस्तित्व अखण्डित है। मैं आशा करती हूं कि हमारी यह आन्तरिक शक्ति और एकता बढ़ती रहेंगी। मुझे भारतीय जनता की शक्ति में विश्वास है।"

आज वही इन्दिरा गांधी प्रधान मन्त्री के रूप में हमारी नवीन आशाओं की महान आश्रय हैं।

her. As the leader of the Congress party she expressed her confidence at a press conference in these words:-

"India today is passing through a crisis. Economic stringency, food scarcity, border skirmishes are some of the complicated problems which she has to face. The Indian people have suffered a lot of undiscribable difficulties through the ages. We stood up as one man with a firm determination and innate strength at the time of a crisis and emerged unscatered out of that. I hope this innate strength and unity of ours will continue to grow. I have full confidence in the strength of the Indian masses".

Today the same Shrimati Indira Gandhi, as our Prime Minister, is the repository of our new aspirations.



जयेद्दिव्य कार्येन्दिरा राष्ट्रनेत्री !



'इन्दिरा प्रशस्तिः'

न्यायान्याय विवेक पाटव गुणात्
त्वं राजहंसं सदा।
नीरक्षीर विवेक लब्ध यशसं
नीत्या ऽजयः कर्मणा।।



मन्त्रे दर्शित बुद्धिवैभव कलौ
ख्यातौ नृपाणां नये ।
जातौ गीष्पति भार्गवावपि च तौ
सम्प्रत्यहो निष्प्रभौ ॥

नीर-क्षीर विवेक के कारण न्याय के क्षेत्र में यशस्वी राजहंस को, आपने न्याय और अन्याय एक दूसरे से अलग करके समझने की अपनी पटुता के कारण, जीत लिया है । इतना ही नहीं मंत्रणा के क्षेत्र में अपनी सूझ-बूझ और कला के लिए विख्यात वृहस्पति और शुक्राचार्य भी आपकी सूझ-बूझ और कौशल के सामने इस समय निस्तेज और लघु जान पड़ते हैं ।

You have won the hearts of your people with your dexterity of discriminating justice from injustice like the legendry Rajhamsa famous for its gift of separating milk from water. Even Vrihaspati and Shukra-charya who are famous for their intelligence and art of counsel are pallid and dwarfed by your own intelligence and skill.



देशोऽयं तव हस्तयोः सुदृढयोः संस्थापस्वीयं हितम्
निश्चिन्तः परितोषमेति नितरां दृष्ट्वोन्नतिं सर्वतः।
खाद्ये राष्ट्रमिदं स्वतन्त्रमभवत् व्यापार ऋद्धिं गतः
विश्वे ऽभूद्यदिदं समादृतमहो सर्वं फलं त्वत्कृतम् ॥

यह देश आपके मजबूत हाथों में अपना हित सुरक्षित देखकर तथा अपनी सर्वतोमुखी प्रगति देखकर अत्यन्त निश्चिन्त होकर संतोष का अनुभव कर रहा है। देश जो खाद्य के सम्बन्ध में स्वावलम्बी हो गया है, देश के व्यापार ने जो प्रगति की है और सबसे बढ़कर विश्व में इस देश को जो सम्मान प्राप्त हुआ है, यह सब आपके निर्देश और कार्यों का ही फल है।

This country is now feeling extreme pleasure at its all round progress and its interests are quite safe at your hands; the progress that has been made by the country in economic field and especially the dignity acquired by this country in the comity of nations is all due to your guidance and leadership.



दीनानां देश एषोऽसुखित बहुजनाः शोषिता मुष्टिमेयै-
र्मा जीवन्तो लभन्ते द्विरपि न बहुधा भोजनं चात्र देशे ।
वस्त्रैर्हीना भवन रहिताः शिक्षया चापि हीना
इत्थं चिन्ता कलित नयना राष्ट्रनेत्री जय त्वम् ॥

यह गरीबों का देश है, यहाँ मुट्ठी भर लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए बहुतों का शोषण किया है, ऐसे बहुत लोग यहाँ दुःखी हैं, वे गर्हित जीवन बिताते हैं, अक्सर उन्हें दो बार भी भोजन नहीं मिलता है, वे वस्त्रहीन हैं, उनके पास मकान नहीं हैं और वे शिक्षा से भी रहित हैं। इस प्रकार की देश-व्यापी चिन्ताएं जिसके नयनों में सतत घूमती रहती हैं ऐसी राष्ट्रनेत्री तुम ही हो।

India is the country of the poor wherein a handful of affluent people have been exploiting the large number of poor people for their selfish ends. Countless people in the country are leading a miserable life to make their both ends meet; they suffer for want of food and clothing; they can't afford to build houses for themselves and are unable to get proper education; you are the leader of these people whose misery is your constant worry.



मन्य एतत्स्वराष्ट्रं स्वतन्त्रं कृतम्
नेतृभि स्त्यागपूतैः स्वदेश प्रियैः ।
किन्तु दैन्यादिदं मुक्ति मातन्वती
कुर्वती कार्य मेका त्वमेवेन्दिरा ॥

माना कि इस देश के त्यागी स्वतन्त्रता-प्रेमियों ने राजनीतिक स्वतन्त्रता दिलायी परन्तु गरीबी से मुक्ति दिलाने के लिए कार्य करने वाली तुम अकेली ही इन्दिरा हो (इन्दिरा लक्ष्मी को भी कहते हैं) ।

It is true that the freedom fighters of this country won political freedom for us but you alone are responsible for taking the country on the path of prosperity and making efforts to remove poverty, for, Indira is another name of Lakshmi the goddess of wealth.

इंदिरे ! मंदिरे तेऽस्ति भक्ति र्यथा
मस्जिदे भावना वर्तते सा तथा ।

या रतिर्वर्तते तेऽत्र गिर्जा गृहे
यज्ञवह्नौ समा सा च संदृश्यते ।।

इंदिरा जी, आपकी जो श्रद्धा मंदिर में है वही पवित्र भावना मस्जिद में भी है। गिरजाघरों के प्रति जो आस्था है, अग्नि के प्रति भी वही आस्था है। आपकी दृष्टि में सभी धर्म समान हैं।

Oh Indira, you have the same reverence for the mosque that you have for the temple; the great sense of respect that you have for a church is also reserved by you for the temple of fire and other religious places; and all religions are equally important for you.

न धर्मो न भाषा-विभेदो न वर्णो
न जातिर्न लिंगं, न वा वेश-भूषा।

न वा प्रांतवादो विभक्तुं प्रभुर्याम्
जयेद्दिव्य कार्येन्दिरा राष्ट्रनेत्री ॥

धर्म, भाषाओं का भेद, वर्ण, जाति, लिंग या वेश भूषा तथा प्रान्तीयतावाद आदि में से कोई भी आपको अखण्ड राष्ट्रवाद या अखण्ड विश्ववाद से विचलित नहीं कर सकता। सचमुच आपके कार्य दिव्य हैं। ऐसी राष्ट्रनेत्री से हम भी दिव्य हैं।

No sense of diversity in religion, language, caste, creed, community, sex, dress or provincialism can detract you from your undivided nationalism and universalism. In fact your deeds are divine and your leadership has given divinity to the country also.

बंग देशो यया क्रौर्यतो मोचितो
जीवितः श्री मुजीबस्त्वया रक्षितः ।

धान्यतः सैन्यतः सर्वसाहाय्यतो
बंग देशस्त्वयाऽसौ प्रजातांत्रितः ।।

आपने बंगला देश को क्रूरता से मुक्ति दिलायी, श्री मुजीब की जान बचायी और उन्हें जीवित जेल से मुक्ति दिलाई, धन, धान्य, सैन्य आदि सब प्रकार की सहायता देकर आपने बंगला देश को प्रजातंत्र बनाया।

You emancipated Bangla Desh from tyranny, saved the life of Shri Mujib, secured his release from the prison and turned Bangla Desh into a democratic republic by helping her militarily and with money and material.

बेंका राष्ट्रियतां गता नियमिता ग्राम्या तथा नागरी
सम्पच्चैव समाजवाद रचना मार्गे चलन्त्या त्वया ।
राष्ट्रे विश्वजनीन सौख्यमनितुं दुःखञ्चसर्वाधिकम्
दूरीकर्तुमिमे समस्तविधयः ख्याताः प्रशस्ताश्चते ।।

आपने बैंकों का राष्ट्रीयकरण कराया, ग्रामीण तथा शहरी सम्पत्ति की मर्यादा स्थापित की। समाजवाद के मार्ग पर आपके ये प्रारम्भिक कदम हैं। राष्ट्र में सार्वजनिक सुख को बढ़ाने, संरक्षण देने तथा जनसंख्या के दुःखों को मिटाने के लिए किए गए ये कार्य आपको अत्यन्त प्रशस्ति और ख्याति दिला रहे हैं।

You nationalised the banks and took steps for fixing limits for the rural and urban property, these are your initial steps towards the goal of socialism; the efforts made by you for promoting the welfare of the people and removing their sufferings have gained extreme popularity and have paved the way to socialism.

चिरायुषा समृद्धि-ऋद्धि-बुद्धिभिः सदा युता
प्रजामुदे प्रवर्ततां प्रवर्धतां श्रियेन्दिरा ॥

चिरायु, बुद्धि, समृद्धि और ऋद्धि से युक्त श्रीमती इंदिरा गांधी जी प्रजा के कल्याण के लिए इस तरह सदा प्रवृत्त हों और दिनानुदिन सफलता और श्री सहित बढ़ें।

Blessed with long life, wisdom, prosperity and eminence, may Shrimati Indira Gandhi always be inclined to the task of people's welfare and proceed with ever greater success and glory towards her cherished goal.

आनन्द सौख्य सदनं जनक प्रदत्तम्
दत्तं त्वया जन हिताय वदान्य मत्या ।
येन त्वदीयममलं सुयशो धरित्र्यां
राकेन्दु कान्ति रिव मोहतमो विहन्ति ।।

पिता से प्राप्त, सब प्रकार की सुख सुविधा से पूर्ण आनन्द भवन को अपनी उदारता के कारण आपने जनता के हित के लिए दे दिया। जिससे आपका निर्मल यश पूर्णिमा की चांदनी की भाँति मोह रूपी अंधकार का नाश कर रहा है। चाँदनी जैसे अंधकार को मिटाती है उसी प्रकार आपका यह दान सम्पत्ति के प्रति लोगों के मोह को कम करने तथा उसे जनहित के लिए समर्पित करने की प्रेरणा देता है।

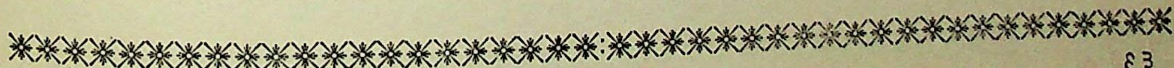
Out of your generosity and love for the people you have given away the majestic and luxurious building of Anand Bhawan which you inherited from your father; your mananimity in renouncing your ancestral palace has dispelled people's illusion and their attachment to property just as the moonlight dispells darkness; and thus you have prompted the people to renounce their property for the welfare of the people.



धन्यासि संस्थाप्य बहूँश्चिकित्सा-
विद्यालयान् प्राणिहिते रता त्वम् ।
विद्यार्थिनो यत्र अधीत्य विद्याम्
वैज्ञानिकान्वेषण तत्पराः स्युः ।।

आप धन्य हैं, प्राणियों के हित के लिए आपने बहुत से चिकित्सा विद्यालयों की स्थापना की है। विद्यार्थी जहाँ विद्या पढेंगे और वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए तत्पर होंगे ।

Blessed be you for having established a number of institutions of medical education where the students engage themselves in the pursuit of greater knowledge and the scientists devote their time in unfolding the mysteries of the nature.





कुशाग्रबुद्धी प्रिय मातृभक्तौ
जनानुरक्ता वथ देशभक्तौ ।
राजीव संजाय सुतौ प्रगल्भौ
वंशस्य राष्ट्रस्य च शं विधत्ताम् ।।

देशभक्त, मातृभक्त, कुशाग्र बुद्धि और जन-प्रेमी आपके राजीव और संजय ये दोनों पुत्र वंश और राष्ट्र के लिए कल्याणकारी बनें ।

May your two sons Rajeev and Sanjay, be blessed with more and more patriotism, intellegence and filial affection, be of service to the nation.





यच्छासने नययुते खलु पञ्चविंशत्
वर्षाणि संसुखकराणि गतानि चाद्य ।
तस्योत्सवे यदिरता सकला सहर्षाः
चित्रं किमत्र जन चेतसि राष्ट्रभक्तिः ॥

जिस न्याययुक्त और सुखकारी शासन के पच्चीस वर्ष आज व्यतीत हो चुके हैं, उसका उत्सव मनाने को सम्पूर्ण प्रजा यदि आज हर्षातिरेक से विह्वल हो रही है तो इसमें आश्चर्य या विचित्रता क्या है इसमें तो जन-मानस के अन्तर की राष्ट्र-भक्ति ही प्रकट होती है ।

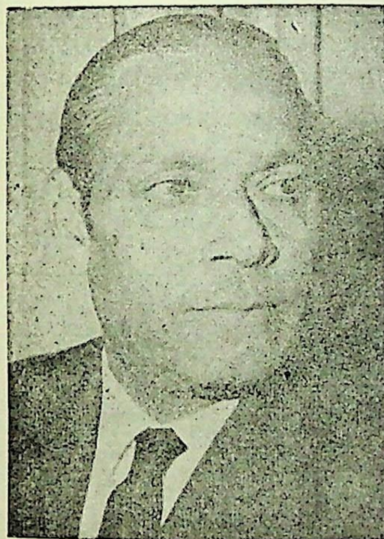
This republic is completing twenty five years of its just and benevolent rule and there is no wonder if on such an occassion all the people are overjoyed and are engaged in celebrations which manifest their patriotic feelings.

रजत जयन्त्युत्सवे दिल्यां पुष्पादि मण्डितां ।
उत्सवानां च वैचित्र्यं ममितोऽदर्शयद्वर !

भारतीय गणराज्य की रजत जयन्ती के अवसर पर सुमनों से सजी दिल्ली नगरी में चारों ओर अनेक प्रकार के विविधतापूर्ण उत्सवों की विचित्रता दृष्टि गोचर हो रही है ।

On the eve of Silver Jubilee of the Indian Republic the city of Delhi is tastefully decorated with flowers and garlands on all sides; people are engaged in variegated celebrations to mark the twenty-fifth anniversary of the Republic.





दिल्ली प्रदेशस्योपराज्यपालः : श्री बालेश्वर प्रसादः

दिल्ली प्रदेश के उप-राज्यपाल : श्री बालेश्वर प्रसाद

Lt. Governor of Delhi : Shri Baleshwar Prasad

—+○+—

श्री प्रसाद महाभागस्य जन्म १९१४ तमे वर्षे जनवरी मासस्य प्रथम तारिकायामभूत्। पाटलीपुत्रविश्वविद्यालयाद् भवान् एम. ए. पर्यन्तम् शिक्षां प्राप्तवान् । प्रशासन सेवा

दीक्षितो भवान् भारतीय प्रशासनिक सेवायामनैकेष्वुच्च पदेषु स्थित्वा देश सेवायां संलग्नः ।

प्रसाद जी का जन्म प्रथम जनवरी, १९१४ को हुआ था । आपने पटना विश्वविद्यालय से एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त की । आप आई. ए. एस हैं । भारतीय प्रशासनिक सेवा में रहकर अनेक उच्च पदों पर आप देश की सेवा करते रहे हैं ।

Shri Baleshwar Prasad was born on 1st January, 1914. He received his degree of M. A. from Patna University. He belongs to the I. A. S. cadre and as a member of the Indian Administrative Service he has been serving the country through distinguished positions.

१९५० तः १९५६ पर्यन्तम् बिहार प्रदेशे अनेकोच्च राजकीय पदेषु स्थित्वा भवान् । जनताजनार्दनस्य सेवाम् अकार्षीत् । १९५६ तः १९५८ पर्यन्तम् वियतनामप्रदेशे अन्ताराष्ट्रीय नियन्त्रण आयोगस्य भारतीयदलस्य परामर्शदातापदेऽपि भवता अमूल्या सेवा कृता ।

श्री बालेश्वर प्रसाद बिहार सरकार में १९५० से १९५६ तक अनेक उच्च पदों पर रहे। १९५६ से १९५८ तक वियतनाम में अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण एवं देखभाल आयोग के भारतीय दल के आप राजनीतिक परामर्शदाता रहे।

Shri Baleshwar Prasad was in the service of the Bihar Government from 1950 to 1956. From 1956 to 1958 he was Political Advisor to the Indian team in the International Control Board in Vietnam.

१९५८ तः १९६३ पर्यन्तम् सिक्किम राज्यस्यामात्यपदवीमलंकृतवान्। १९६३ तः १९६९ पर्यन्तम् मणिपुर प्रदेशस्य मुख्य आयुक्त पदे तथा १९६९ तः १९७० पर्यन्तम् उपराज्यपाल पदे स्थित्वापि भवता ऽविस्मरणीया सेवा कृता।

१९५८ से १९६३ तक आप सिक्किम के दीवान रहे। १९६३ में आपको मणिपुर का मुख्य आयुक्त बनाया गया और आप इस पद पर १९६९ तक रहे। १९६९ से ७० तक आप मणिपुर के उपराज्यपाल रहे।

During 1958-63 he was Dewan of Sikkim. In 1963 he was appointed Chief Commissioner of Manipur in which capacity he served till 1969. During 1969-70 he worked as the Lt. Governor of Manipur.

दिल्ली प्रदेशागमनात् पूर्वं भवान् असम प्रदेशीय राज्यपालस्य परामर्शदातासीत्। १९७२ तमे वर्षे मार्च मासस्य २४ तमे दिने भवान् दिल्ली राज्यस्य उपराज्यपाल पदमलंकृतवान् । अधुना भवच्छत्रच्छायायाम् दिल्ली प्रदेशः निरन्तरं विकास सरणिं प्रत्येधमानः राजधान्यनुरूपां परां समृद्धिं लोकानन्द करीं शोभाञ्च लप्स्यते इत्याशास्महे वयम् ।

दिल्ली के उप-राज्यपाल बनने से पूर्व आप असम में राज्यपाल के परामर्शदाता पद पर थे।

२४ मार्च, १९७२ को आपने दिल्ली के उपराज्यपाल का कार्यभार सम्भाला । आपकी छत्रछाया में दिल्ली प्रदेश निरन्तर विकास को प्राप्त करता हुआ राजधानी के अनुरूप शोभा को प्राप्त करेगा ऐसी आशा है।

Before coming over to Delhi as Lt. Governor, he was holding the office of Advisor to the Governor of Assam.

On the 24th of March, 1972 he took over as the Lieut. Governor of the Union Territory of Delhi. We hope that under your guidance this State will flourish in every respect.

— स्वतन्त्रताया रजत जयन्ती —



तारक - भूषित - रजनी हर्ष मेति,
असमय मद्य दीपमालिका राजति।
जन मन गण राष्ट्रगीतमिह गुञ्जति,
आबाल वृद्ध-जन जय रव उदेति।

तारों से विभूषित रात खुशी में फूली नहीं समा रही है, असमय में आज यह दीपावली उजागर हो रही है, यहाँ 'जन-मन-गण' राष्ट्रगीत गूंज रहा है, आबालवृद्ध जन का कण्ठ 'जय' रव से निनादित हो रहा है।

The star studded night is filled with boundless joy; the festival of lights has come up out of season, here the swift notes of the national anthem are echoing; and the full-throated voice of the people, young and old, is vibrating with joy.

स्वतन्त्रतायाः खलु रजत जयन्ती, कोटि कोटि जन-मन-आनन्दयन्ती ।
शत्रूणां हृदि सर्पं इव लुठन्ती, मित्राणां हृदि सुधा मर्पयन्ती ।

यह स्वतंत्रता की रजत-जयंती है कोटि-कोटि जनों के हृदय को आनन्द से आप्लावित कर रही है, शत्रुओं के हृदयों पर साँप-जैसा लुटा रही है मित्रों के हृदय में अमृत घोल रही है ।

The silver jubilee celebration of our Independence has started and it is giving heartfelt joy to crores of our people; it is creating terror in the hearts of enemies and filling the hearts of friends with joy.

अस्माभिः स्वातन्त्र्य रक्षणार्थं बद्ध परिकरैः सदैव भवितव्यम्
यदि कुटिल चक्षुषा कश्चित् पश्येत् तत् - क्षणमेव तच्चक्षुर्भेतव्यम् ।

हमें स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हमेशा कमर कसकर खड़े हुए रहना चाहिए यदि कोई हमारी ओर टेढ़ी नजर से देखे तो हमें तत्क्षण ही उस आँख को फोड़ देना चाहिए ।

we should always keep ourselves ready to save our Independence and if any one casts an angry look at us we should have sufficient strength to deal with him in a befitting manner.

— समापनम् —



भारत भूमिर्बहुरमणीया,
यत्रास्माकं जातं जन्मः ।
अंके यस्या नित्यं पलिताः,
वृद्धि प्राप्ता हर्षं यामः ॥१॥

जिस भारत भूमि में हमारा जन्म हुआ है, जिसकी गोद में हम नित्य पले और बढ़े हैं। वह अत्यन्त रमणीय है।

Bharat, the land where we were born and nursed and where we grew up and are happy today, is a land of great charm.

वृक्षा वल्यो हरिता - भरिताः,
बहु फल पुष्पैरेता प्रणताः ।
जलनिधिरस्याः पादौधावति,
ऋषि-मुनि-वृन्द एनां गायति ।।२।।

इसके हरे-भरे वृक्ष और वल्लरियाँ फलों और फूलों से झुके हुए हैं, जलनिधि इसके चरणों को पखारता है तथा ऋषि-मुनि इसकी कीर्ति गाथा का गान करते हैं।

The green trees and creepers, laden with fruits and flowers, are beaming and offering their salutations to the motherland. The sea is washing her feet and groups of sages and ascatics are singing the praises of the motherland.

भीम समानं शूरं वीरं,
कर्ण समानं वा दातारम् ।

भीष्मनिभं वा दृढप्रतिज्ञम्,
कोन्यो देशो जनयितुमर्हति ॥३॥

भीम के समान शूर-वीर, कर्ण के समान दानी तथा भीष्म के समान दृढ़-प्रतिज्ञ व्यक्तियों को और कौन देश उत्पन्न करने में समर्थ है।

Which other country is capable of giving birth to great heroes like Bhima, donors like Karna and men of determination like Bhishma.

एतद्देश - प्रसूताग्रजतः,
देशीयान्या आत्मचरित्रम्।
शिक्षितवन्तो हा त्विदानीम्,
परदेशीयानां शिष्यो जातः ॥४॥

इस देश में उत्पन्न हुए पूर्व पुरुषों से, अन्य देश वासी, अपने-अपने चरित्र की, एक समय था जब,

It were our ancestors, born in this country, from whom other countries learnt the



शिक्षा प्राप्त किया करते थे। परन्तु दुर्भाग्य से आज वही देश विदेशियों का शिष्य बन गया है।

ethics of life. It is a pity that the same country today has had to become a disciple of aliens.

हा ! दौर्भाग्याद् देशोऽस्माकम्,
यवनैर्गौरैः पादैर्दलितः।
किञ्चित्कालं दास्यमवाप्तः,
नाना दुःखैः क्लेशैर्व्याप्तः ॥५॥

दुर्भाग्य से हमारा यह भारत देश यवनों और गोरों द्वारा पादाक्रान्त हुआ और कुछ समय तक दास रहने पर अनेक प्रकार के दुःखों और क्लेशों से भर गया।

Alas, this country of ours was trampled upon by Muslims and other foreign invaders and for a spell of time she had to suffer many a sorrow and face animosities.



राष्ट्रपिता नो गान्धि महात्मा,
ईश्वर कृपया यदावतीर्णः।
तत्सेनानीत्वे युयुधे देशः,
जातः त्वरितः सफलोदेशः ॥६॥

ईश्वर की कृपा से, तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इस देश में अवतीर्ण हुए। उनके नेतृत्व में देश ने स्वतन्त्रता के लिए अहिंसात्मक युद्ध करके शीघ्र ही सफलता प्राप्त की।

By the grace of God, the Father of The Nation Mahatma Gandhi was born in this country of ours, under whose leadership our country achieved independence through a non-violent struggle.

किन्तु रणेऽस्मिन् स्वातन्त्र्यस्यः,
कृतमस्माभिर्बहु बलिदानम्।
गान्धि-तिलक-जवाहर-प्रभृतिभिः,
देशस्यार्थे कष्टं सोढम् ॥७॥



इस स्वतन्त्रता के संग्राम में हमारे देश ने बहुत बलिदान किया। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और जवाहरलाल आदि स्वतन्त्रता सेनानियों ने देश के लिए बहुत अधिक कष्ट सहे।

In our struggle for freedom many patriots became martyrs and leaders like Mahatma Gandhi, Lokamanya Tilak and Jawaharlal Nehru underwent variegated sufferings for the country.

रजत-जयन्त्यां स्वातन्त्र्यस्य,
वयं भवामो हर्षोन्मत्ताः।
रक्षायै अपि स्वातन्त्र्यस्य,
यामः नित्यं दृढतरचित्ताः ॥८॥

अपनी स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के अवसर पर हम हर्ष से पागल हो उठें एवं अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए दृढ़-संकल्प हों।

While celebrating the Silver Jubilee of our Independence we are full of great joy. Let us all be steadfast in our determination to safeguard our independence.



ईश्वर ! देशं कुरु बलवन्तम्,
दर्प - विरहितं विनयोपेतम् ।
सत्यपथान्न वयं विचलेम,
जन-सेवायांच सदा लगेम ॥६॥

हे प्रभु ! इस देश को शक्तिशाली बनाओ, इसे अभिमान से रहित और विनयशील बनाओ। हम सत्य के मार्ग से विचलित न हों और सदा जन-सेवा में लगे रहें।

May the Almighty invest the country with non-arrogant strength and humility, may we never forsake the path of truth and keep ourselves engaged in the service of the people.

भ्रष्टाचारः शीघ्रमपेयात्,
अत्याचारं न कोऽप्युपेयात् ।

प्रादेशिकता - भावो गच्छतु,
राष्ट्रीयत्वं हृदये राजतु ॥१०॥

इस देश से भ्रष्टाचार शीघ्र दूर हो, कोई अत्याचार का शिकार न हो, प्रादेशिकता की संकीर्ण भावना नष्ट हो जाय तथा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रीयता का भाव जाग उठे।

May corruption disappear soon and may none tolerate tyranny; May the feelings of parochialism disappear and the sentiments of nationalism develop.

उच्च - नीचता - भावोनश्येत्,
तुल्यं सर्वं सर्वः पश्येत् ।
निर्धनता - पिशाचिका लुप्येत्,
सुख-सम्पद्-विभवः खलु दीपेत् ॥११॥

ऊंच-नीच का भाव नष्ट हो जाय, सभी एक-दूसरे को समता के भाव से देखें। गरीबी-रूपी

May the feelings of disparity between high and low be wiped out and may all the



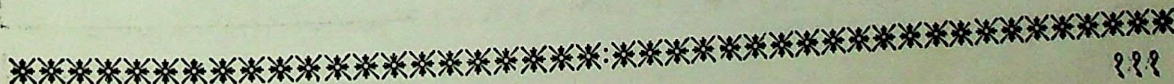
पिशाचिनी देश से लुप्त हो जाय एवं सुख, सम्पत्ति और वैभव जगमगा उठें।

people feel equal. May the demon of poverty be doomed and the light of happiness and prosperity dawn on our country.

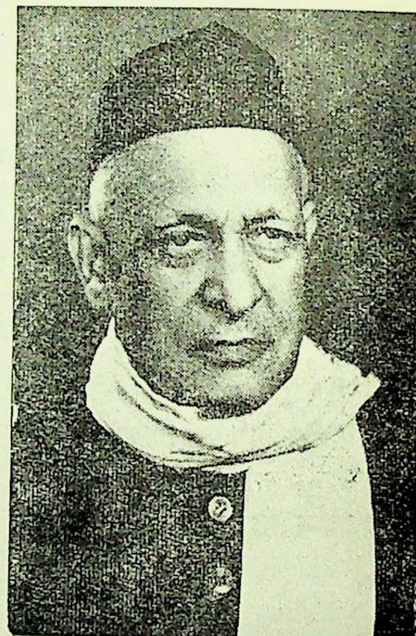
धर्मोऽधर्मे विजयी भूयात्,
लोकः सर्वो धर्म परः स्यात्।
स्वाराज्यं चापि सुराज्यंस्यात्,
गान्धेः स्वप्नः साकारः स्यात् ॥१२॥

अधर्म के ऊपर धर्म की विजय हो, सम्पूर्ण देश धर्मानुकूल आचरण करने वाला बने; स्वराज्य सुराज भी बन जाय और इस प्रकार महात्मा गांधी का स्वप्न साकार हो उठे।

May righteousness triumph over the evil and may the whole world follow the path of righteousness; May our 'Swarajya' (Self Government) turn into 'Suraj' (Good Government) and may thus the dream of the Father of the Nation come true.







इति श्री विद्यावाचस्पति वैद्यरत्न परमानन्द पाण्डेय
विरचितं त्रिभाषात्मकं 'गणराज्य चम्पू'
नामकं काव्यं सम्पूर्णम् ।

—लेखक—

